आठवां भाग

(१)

लगभग दो महीने बीत चुके थे। ज़ोरों से पड़नेवाली आधी गर्मी जा चुकी थी, लेकिन सेर्गेई इवानोविच कोज़्निशेव केवल अभी मास्को से जाने को तैयार हुआ था।

इस समय के दौरान कोज़्निशेव के जीवन में कुछ अपनी घटनायें घटी थीं। एक साल पहले उसके छः वर्षों का फल, उसकी अपनी पुस्तक – 'यूरोप और रूस में शासन के आधारों और रूपों का सिंहावलोकन' – समाप्त हो चुकी थी। इस पुस्तक के कुछ भाग और भूमिका पत्र-पत्रिकाओं में छप चुके थे और कोज़्निशेव ने कुछ भाग अपने मिलने-जुलने वालों को पढ़कर सुनाये थे। इसलिये इस रचना के विचार लोगों के लिये सर्वथा नये नहीं हो सकते थे। फिर भी कोज़्निशेव को यह आशा थी कि उसकी किताब प्रकाशित होने पर समाज में बड़ा प्रभाव उत्पन्न करेगी और यदि विज्ञान के क्षेत्र में क्रान्ति नहीं, तो विद्वानों की दुनिया में भारी हलचल ज़रूर पैदा कर देगी।

बहुत ही अच्छी तरह से मांजने-संवारने के बाद पिछले वर्ष कोज़्निशेव ने यह पुस्तक प्रकाशित करवा दी थी और वह पुस्तक-विक्रेताओं के पास पहुंच गयी थी।

किसी से इस पुस्तक के बारे में कुछ भी न पूछते हुए, अपने मित्रों के ऐसे प्रश्नों के कि उसकी किताब का क्या हाल है, मन मारकर और बनावटी उदासीनता से उत्तर देते और पुस्तक-विक्रेताओं से यह

न पूछते हुए कि पुस्तक की बिक्री कैसी हो रही है, कोज़्निशेव बहुत ही सावधानी तथा तनावपूर्ण ध्यान से इस बात पर नज़र रख रहा था कि उसकी पुस्तक समाज और साहित्य में क्या प्रभाव पैदा करती है।

किन्तु एक, दो और तीन सप्ताह बीत गये, लेकिन समाज में कोई प्रभाव दिखाई नहीं दिया। उसके मित्र, विशेषज्ञ और विद्वान, स्पष्टतः शिष्टाचारवश कभी-कभी इसकी चर्चा कर देते थे। उसके अन्य परिचित, जिन्हें विद्वत्तापूर्ण पुस्तक में कोई दिलचस्पी नहीं थी, इसके बारे में उससे कोई बात ही नहीं करते थे। और समाज ने भी, जो अब किसी दूसरी चीज़ में व्यस्त था, इसके बारे में पूरी उदासीनता प्रकट की। पत्र-पत्रिकाओं में भी एक महीने तक इस पुस्तक के बारे में एक शब्द भी नहीं लिखा गया।

कोज़्निशेव ने बहुत तफ़सील में यह हिसाब लगाया कि समीक्षा लिखने के लिये कितना समय लगना चाहिये, किन्तु एक, फिर दूसरा महीना बीत गया और वही ख़ामोशी बनी रही।

केवल 'उत्तरी गुबरैला' पत्रिका में गायक द्राबान्ती के बारे में, जिसकी आवाज़ जाती रही थी, एक मज़ाक़िया लेख छपा और उसी में कोज़्निशेव की क़िताब के सम्बन्ध में भी कुछ तिरस्कारपूर्ण शब्द कहे गये थे, जिनका आशय यह था कि इस पुस्तक की सभी बहुत पहले से भर्त्सना कर चुके हैं और इसे सभी के आम उपहास के लिये अर्पित कर दिया गया है।

आख़िर तीसरे महीने में एक गम्भीर पत्रिका में आलोचनात्मक लेख छपा। कोज़्निशेव इस लेख के लेखक से परिचित था। गोलुब्त्सोव के यहां उसकी उससे एक बार भेंट हो चुकी थी।

लेख लिखनेवाला एकदम जवान और बीमार हास्य-व्यंग्य लेखक था, लेखक के नाते बड़ा दबंग, मगर बहुत ही कम पढ़ा-लिखा और व्यक्तिगत सम्बन्धों में बहुत ही झेंपू।

लेखक के प्रति अत्यधिक तिरस्कार-भावना रखते हुए भी कोज़्निशेव बड़े आदर से लेख को पढ़ने लगा। लेख भयानक था।

हास्य-व्यंग्य लेखक ने सारी पुस्तक को इस तरह से समझा था, जैसे उसे समझना सम्भव नहीं था। किन्तु उसने ऐसी होशियारी से उद्धरण चुने थे कि जिन लोगों ने पुस्तक को पढ़ा नहीं था (और

ज़ाहिर है कि लगभग किसी ने भी उसे नहीं पढ़ा था) उनके लिये यह स्पष्ट हो जाता था कि सारी पुस्तक भारी-भरकम शब्दों का, जिनका ग़लत उपयोग किया गया है, (जिनके सामने प्रश्नचिह्न लगे हुए थे) संकलन है और पुस्तक-लेखक सर्वथा अनभिज्ञ व्यक्ति है। यह सब कुछ ऐसी समझ-बूझ से किया गया था कि कोज़्निशेव ने ख़ुद भी ऐसी समझ-बूझ से इन्कार न किया होता और यही सबसे भयानक बात थी।

इस चीज़ के बावजूद कि कोज़्निशेव ने बड़ी ईमानदारी से समीक्षक के निष्कर्षों को परखा, फिर भी उसने क्षण भर को भी उन त्रुटियों तथा भूलों पर रुककर विचार नहीं किया, जिनका मज़ाक़ उड़ाया गया था। उसे यह बिल्कुल स्पष्ट था कि ऐसे उद्धरणों को जान-बूझकर चुना गया है। किन्तु इसी समय वह अनचाहे ही इस लेख को लिखनेवाले के साथ अपनी भेंट की हर छोटी से छोटी तफ़सील को याद करने लगा।

"मैंने उसके दिल को किसी तरह की ठेस तो नहीं लगायी थी?" कोज़्निशेव ने अपने आपसे पूछा।

और यह याद आने पर कि उस भेंट में उसने इस नौजवान की अनभिज्ञता को प्रकट करनेवाला एक शब्द सुधारा था, कोज़्निशेव को इस लेख के पीछे छिपी भावना का स्पष्टीकरण मिल गया।

इस लेख के बाद इस पुस्तक के बारे में प्रेस और बातचीत में भी एकदम ख़ामोशी छा गयी और कोज़्निशेव समझ गया कि इतनी मेहनत और इतने प्यार से छः वर्षों के दौरान लिखी गयी उसकी पुस्तक ने अपनी ज़रा भी छाप नहीं छोड़ी है।

कोज़्निशेव की स्थिति इसलिये और भी बुरी थी कि इस पुस्तक को समाप्त करने के बाद, जो उसका अधिकतर समय ले जाती थी, उसके पास अध्ययन-कक्ष में करने को कोई काम नहीं रह गया था।

कोज़्निशेव बुद्धिमान, पढ़ा-लिखा, स्वस्थ और कर्मशील व्यक्ति था और उसकी समझ में नहीं आता था कि अपनी क्रियाशीलता का कहां उपयोग करे। मेहमानख़ानों, सभा-सम्मेलनों तथा समितियों और अन्य जगहों पर भी, जहां बोलना-बतियाना सम्भव था, उसके समय का एक भाग ही व्यतीत होता था, लेकिन बहुत अर्से से नगरवासी होने के कारण वह बातों में ही अपना पूरा समय नष्ट नहीं होने देता

था, जैसा कि उसका अनुभवहीन भाई लेविन मास्को आने पर करता था, कोज़्निशेव के पास फ़ुरसत का बहुत-सा वक़्त और मानसिक शक्ति बच रहती थी।

ख़ुशक़िस्मती ही कहिये कि उसकी पुस्तक की असफलता के कारण उसके लिये इस बहुत ही कठिन समय में विधर्मियों, अमरीकी मित्रों, समारा की भुखमरी, प्रदर्शनी और प्रेत-विद्या की जगह स्लाव समस्या, जो पहले समाज की तह में धीमे-धीमे सुलग रही थी, उभरकर सामने आ गयी थी और कोज़्निशेव, जो कभी इस प्रश्न को उठानेवाले पहले लोगों में से एक था, पूरी तरह इसी काम में जुट गया।

कोज़्निशेव का जिन लोगों से वास्ता रहता था, उनके हलक़े में इस समय स्लाव प्रश्न और सेर्ब-तुर्की युद्ध के सिवा न तो किसी बात की चर्चा होती थी और न किसी अन्य चीज़ के बारे में लिखा जाता था। काहिल लोगों की भीड़ वक़्त को नष्ट करने के लिये आम तौर पर जो कुछ करती है, वह अब स्लावों के भले के लिये किया जा रहा था। बॉलों, कन्सर्टों, दावतों, फ़ैशन शो, बीयरख़ानों और रेस्तोरानों में, यानी सभी जगह स्लावों के प्रति सहानुभूति का प्रमाण मिलता था।

इस प्रश्न के सम्बन्ध में जो कुछ कहा और लिखा जा रहा था, उसकी बहुत-सी तफ़सीलों से कोज़्निशेव सहमत नहीं था। उसे यह स्पष्ट था कि स्लाव प्रश्न एक ऐसा फ़ैशनदार मनबहलाव बन गया है, जो हमेशा बदलते रहकर समाज के लिये वक़्त बिताने का साधन होते हैं। उसे यह भी साफ़ दिखाई दे रहा था कि बहुत-से लोग अपनी स्वार्थसिद्धि और महत्त्वाकांक्षा की तृप्ति के लिये इस काम में लगे हुए हैं। उसे इस बात की भी चेतना थी कि अख़बार केवल एक ही उद्देश्य से बहुत-सी अनावश्यक और अतिशयोक्तिपूर्ण सामग्री छापते हैं – ताकि अपनी ओर ध्यान आकृष्ट कर सकें और दूसरों से ज़्यादा अपना शोर मचाने में सफल हो सकें। वह यह देखे बिना न रह सका कि समाज के इस आम जोश की लहर में वही सबसे आगे आ गये थे और सबसे अधिक ज़ोर से चिल्लाते थे, जो ख़ुद असफल और उपेक्षित थे – सेना के बिना सेनापति, मन्त्रालयों के बिना मन्त्री, पत्रिकाओं के बिना पत्रकार, अनुयायियों के बिना पार्टी-नेता। उसने

देखा कि इस मामले की बहुत-सी बातों में गम्भीरता का अभाव और बहुत कुछ हास्यास्पद था। किन्तु वह यह देखे और माने बिना भी न रह सका कि निस्सन्देह लोगों का जोश लगातार बढ़ता जा रहा है, जो समाज के सभी वर्गों को सूत्रबद्ध कर रहा है और जिसके प्रति सहानुभूति अनुभव न करना सम्भव नहीं। स्लाव सहधर्मियों और भाइयों के हत्याकाण्ड से उन पीड़ितों के प्रति सहानुभूति और अत्याचारियों के प्रति क्रोध की भावना पैदा होती थी। महान ध्येय के लिये संघर्षशील सेर्बों और मान्टनीग्रो के निवासियों की वीरता सभी लोगों में केवल बातों द्वारा ही नहीं, बल्कि अमली तौर पर अपने भाइयों की सहायता करने की चाह पैदा कर रही थी।

किन्तु कोज़्निशेव के लिये ख़ुशी की एक और बात भी थी – यह थी जनमत की अभिव्यक्ति। समाज ने निश्चित रूप में अपनी इच्छा व्यक्त की थी। जैसा कि कोज़्निशेव कहता था – जन-आत्मा को वाणी मिली है। और वह इस मामले में जितनी अधिक रुचि लेता था, उतना ही अधिक उसे यह स्पष्ट होता जाता था कि यह मामला बहुत विराट पैमाना हासिल करेगा, युग-घटना बनेगा।

उसने अपने को इस महान ध्येय के लिये समर्पित कर दिया और अपनी पुस्तक के बारे में सोचने की बात भूल गया।

वह अब हर समय इतना व्यस्त रहता था कि अपने नाम आनेवाले पत्रों और अनुरोधों के उत्तर भी नहीं दे पाता था।

पूरे वसन्त और कुछ गर्मी तक काम करने के बाद वह जुलाई के महीने में ही भाई के पास गांव जाने को तैयार हो पाया था।

कोज़्निशेव दो सप्ताह के आराम और साथ ही दूरस्थ गांव में जन-आत्मा की गहराई के उस उभार को देख कर, जिसके अस्तित्व का उसे और राजधानी और नगरों के सभी लोगों को पूरा विश्वास था, आनन्दित होने के लिये वहां जा रहा था। कातावासोव भी, जो लेविन को उसके यहां जाने के अपने दिये हुए वचन को बहुत अर्से से पूरा करने की सोच रहा था, उसके साथ हो लिया।

(२)

कोज़्निशेव और कातावासोव कूर्स्की रेलवे-स्टेशन पर, जहां आज ख़ास तौर पर बहुत भीड़ थी, बग्घी से उतरे ही थे और उन्होंने सामान लेकर अपने पीछे आ रहे नौकर पर नज़र डाली ही थी कि इसी समय चार बग्घियों में स्वयंसेवक भी वहां पहुंच गये। महिलाओं ने गुलदस्ते भेंट करते हुए उनका स्वागत किया और वे उनके पीछे उमड़ती हुई भीड़ के साथ-साथ स्टेशन की इमारत में दाख़िल हुईं।

स्वयंसेवकों का स्वागत करनेवाली एक महिला ने प्रतीक्षालय से बाहर आते हुए कोज़्निशेव को सम्बोधित किया।

"आप भी स्वयंसेवकों को विदा करने आये हैं?" उसने फ़्रांसीसी में पूछा।

"नहीं, प्रिंसेस, मैं ख़ुद जा रहा हूं। आराम करने के लिये अपने भाई के यहां। आप क्या हमेशा विदा करने आती हैं?" कोज़्निशेव ने होंठों पर हल्की-सी मुस्कान लाते हुए प्रश्न किया।

"ऐसा तो करना ही चाहिये!" प्रिंसेस ने उत्तर दिया। "यह सच है न कि हमारे यहां से आठ सौ स्वयंसेवक भेजे जा चुके हैं? मल्वीन्स्की ने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया।"

"आठ सौ से अधिक। अगर उन्हें भी गिन लिया जाये, जिन्हें सीधे मास्को से नहीं भेजा गया, तो एक हज़ार से अधिक जा चुके हैं," कोज़्निशेव ने कहा।

"तो मैंने ठीक ही कहा था न!" महिला ख़ुश होते हुए बोली। "और यह भी सच है न कि लगभग दस लाख रूबल का चन्दा हो चुका है?"

"इससे अधिक, प्रिंसेस।"

"और आज के समाचार के बारे में क्या ख़्याल है? फिर से तुर्कों का मुंह तोड़ दिया गया।"

"हां, मैंने पढ़ा है," कोज़्निशेव ने उत्तर दिया। उन्होंने नवीनतम युद्ध-समाचार की चर्चा की, जो इस बात की पुष्टि करता था कि पिछले तीन दिनों में तुर्कों को सभी मोर्चों पर मुंह की खाकर भागना पड़ा था और अगले दिन निर्णायक लड़ाई होनेवाली थी।

"अरे हां, एक बहुत ही अच्छे नौजवान ने अपनी सेवायें प्रस्तुत की हैं। मालूम नहीं कि उसके मामले में क्यों कठिनाइयां आ गयी हैं। मैं उसे जानती हूं और आपसे यह अनुरोध करना चाहती हूं कि कृपया उसके लिये एक रुक़्क़ा लिख दीजिये। काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने उसे भेजा है।"

अपनी सेवायें प्रस्तुत करनेवाले इस नौजवान के बारे में वे सभी तफ़सीलें मालूम करके, जो प्रिंसेस को मालूम थीं, कोज़्निशेव ने पहले दर्जे के प्रतीक्षालय में जाकर इस काम से सम्बन्धित आदमी के नाम रुक़्क़ा लिखा और प्रिंसेस को दे दिया।

"आपको मालूम है या नहीं कि प्रसिद्ध... काउंट व्रोन्स्की भी इसी गाड़ी से जा रहा है," प्रिंसेस ने उत्साह तथा अर्थपूर्ण मुस्कान के साथ कोज़्निशेव से तब कहा, जब उसने उसे पुनः ढूंढ़कर रुक़्क़ा दिया।

"मैंने सुना था कि वह जा रहा है, मगर कब जा रहा है, मुझे यह मालूम नहीं था। इसी गाड़ी से?"

"मैंने उसे देखा है। वह यहीं है, सिर्फ़ मां ही उसे विदा करने आई है। उसकी वर्त्तमान परिस्थिति में यही सबसे अच्छा है, जो वह कर सकता था।"

"हां, बेशक, ऐसा ही है।"

ये दोनों बातें कर रहे थे कि लोगों की भीड़ इनके पास से गुज़रती हुई भोजनालय की ओर उमड़ पड़ी। ये दोनों भी उधर चले गये और वहां उन्होंने जाम हाथ में लिये हुए एक महानुभाव को ऊंची आवाज़ में स्वयंसेवकों को सम्बोधित करते सुना। "अपने धर्म, मानव-जाति और अपने भाइयों की सेवा कीजिये," अपनी आवाज़ को अधिकाधिक ऊंची करते हुए यह महानुभाव कहता जा रहा था। "इस महान कार्य के लिये मां मास्को आपको आशीर्वाद देती है। हुर्रा!" उसने ऊंची आवाज़ और डबडबाई आंखों से अपनी बात समाप्त की।

सभी "हुर्रा!" चिल्ला उठे, लोगों की नई भीड़ हॉल में उमड़ आई और प्रिंसेस गिरते-गिरते बची।

"अरे प्रिंसेस! कहिये, कैसा लगा भाषण!" ओब्लोन्स्की ने अचानक भीड़ के बीच से प्रकट होते हुए मुस्कराकर कहा। "बहुत

बढ़िया, बहुत हार्दिकता से बोला न? शाबाश है! सेर्गेई इवानोविच, आप भी यहां हैं! आप भी अपनी ओर से कुछ शब्द कहिये न, उत्साह बढ़ानेवाले। आप तो इतना अच्छा बोलते हैं," उसने आदर और सावधानीपूर्ण कोमल मुस्कान से तथा कोज़्निशेव का हाथ पकड़कर उसे तनिक आगे बढ़ाते हुए कहा।

"नहीं, मैं ख़ुद इस वक़्त जा रहा हूं।"

"कहां?"

"भाई के पास, गांव में," कोज़्निशेव ने उत्तर दिया।

"तो आपकी मेरी पत्नी से भेंट होगी। मैंने उसे पत्र तो लिखा है, मगर आपकी भेंट ख़त से पहले होगी। कृपया उससे कहिये कि आपकी मुझसे मुलाक़ात हुई थी और यह कि मैं all right* हूं। वह समझ जायेगी। मेहरबानी करके उससे यह भी कह दीजिये कि मुझे संयुक्त एजेंसी के बोर्ड का सदस्य... हां, वह समझ जायेगी! ये सब les petites misères de la vie humaine,**" उसने मानो क्षमा-याचना करते हुए प्रिंसेस से कहा। म्याग्काया तो, लीज़ा नहीं, बीबीश, एक हज़ार बन्दूकें और बारह नर्सें भेज रही है। मैंने आपको बताया था न?"

"हां, मैंने सुना है," कोज़्निशेव ने मन मारकर उत्तर दिया।

"अफ़सोस की बात है कि आप जा रहे हैं," ओब्लोन्स्की ने कहा। "कल हम दो व्यक्तियों – पीटर्सबर्ग के दीमेर-बार्तन्यान्स्की और हमारे ग्रीशा वेसेलोव्स्की – की विदाई दावत कर रहे हैं। दोनों मोर्चे पर जा रहे हैं। वेसेलोव्स्की ने हाल ही में शादी की है। बहादुर आदमी है! ठीक है न, प्रिंसेस?" उसने महिला को सम्बोधित किया।

महिला ने कोई उत्तर न देकर कोज़्निशेव की तरफ़ देखा। कोज़्निशेव और प्रिंसेस उससे मानों पिंड छुड़ाना चाहते थे, इस बात से ओब्लोन्स्की को कोई परेशानी नहीं हुई। वह मुस्कराता हुआ कभी तो प्रिंसेस की टोपी के पंख की ओर तथा कभी इधर-उधर ऐसे देखता, मानो कुछ याद कर रहा हो। एक महिला को देखकर, जो चन्दा जमा करने का डिब्बा लिये घूम रही थी, उसने बुलाकर पांच रूबल का नोट डिब्बे में डाल दिया।

---

* ठीक-ठाक। (अंग्रेज़ी)

** मानव जीवन की छोटी-छोटी मुसीबतें हैं। (फ़्रांसीसी)

"जब तक मेरी जेब में पैसे होते हैं, ये चन्दे के डिब्बे देखकर मैं विह्वल हुए बिना नहीं रह सकता," उसने कहा। "आज का क्या समाचार है? शाबाश है मान्टनीग्रो लोगों को!"

"यह आप क्या कह रही हैं!" प्रिंसेस के यह बताने पर कि व्रोन्स्की इसी गाड़ी से जा रहा है, ओब्लोन्स्की चिल्ला उठा। क्षण भर को उसके चेहरे पर उदासी दिखाई दी, किन्तु अगले ही क्षण टांगों को डोलाते और गलमुच्छों को ठीक करते हुए ओब्लोन्स्की जब उस कमरे में दाख़िल हुआ, जहां व्रोन्स्की था, तो इस बात को बिल्कुल भूल चुका था कि अपनी बहन की लाश पर वह कैसे तड़प-तड़प कर रोया था, और व्रोन्स्की के रूप में उसे केवल एक वीर और अपना पुराना मित्र ही दिखाई दिया।

"सारी कमियों-त्रुटियों के बावजूद उसकी ख़ूबियों से इन्कार करना अन्याय होगा," ओब्लोन्स्की के जाते ही प्रिंसेस ने कोज़्निशेव से कहा। "बिल्कुल रूसी, बिल्कुल स्लाव स्वभाव है इसका! मुझे सिर्फ़ यही डर है कि व्रोन्स्की को उससे मिलना अच्छा नहीं लगेगा। कुछ भी कहिये, मगर व्रोन्स्की का भाग्य मेरे मन को विह्वल किये बिना नहीं रहता। उसके साथ रास्ते में बात कीजियेगा।"

"हां, अगर ऐसा मौक़ा बन गया।"

"मुझे वह कभी अच्छा नहीं लगा। किन्तु उसका यह काम उसे बहुत कुछ क्षमा कर देता है। वह न सिर्फ़ ख़ुद जा रहा है, बल्कि सवारों का एक दस्ता भी अपने ख़र्च पर साथ ले जा रहा है।"

"हां, मैंने सुना है।"

स्टेशन की घण्टी बजी। सभी लोग दरवाज़ों की तरफ़ लपके।

"वह रहा!" प्रिंसेस ने व्रोन्स्की की ओर इशारा करते हुए कहा। लम्बा ओवरकोट और चौड़े किनारोंवाला काला टोप पहने वह अपनी मां का हाथ थामे चला जा रहा था। ओब्लोन्स्की बड़ी ज़िन्दादिली से कुछ कहता हुआ उसकी बग़ल में चल रहा था।

व्रोन्स्की माथे पर बल डाले हुए सामने देख रहा था और मानो ओब्लोन्स्की की बातें नहीं सुन रहा था।

सम्भवतः ओब्लोन्स्की के बताने पर उसने उधर देखा, जहां कोज़्नि-शेव और प्रिंसेस खड़े थे और चुपचाप टोप ऊपर उठाकर उनका अभि-

वादन किया। बुढ़ाया और व्यथा को अभिव्यक्त करनेवाला उसका चेहरा पथराया-सा लग रहा था।

प्लेटफ़ार्म पर पहुंचकर व्रोन्स्की ने चुपचाप अपनी मां को आगे बढ़ा दिया और एक अलग डिब्बे में ग़ायब हो गया।

प्लेटफ़ार्म पर 'भगवान रक्षा करें ज़ार की' राष्ट्र गान और इसके बाद "हुर्रा!" गूंज उठा। लम्बे क़द और धंसी छाती वाला एक नौजवान अपने सिर के ऊपर नमदे का टोप और गुलदस्ता हिलाते हुए ऐसे सिर झुका रहा था कि उसकी ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट हुए बिना नहीं रह सकता था। उसके पीछे से दो फ़ौजी अफ़सर और छज्जेदार गन्दी टोपी पहने बड़ी दाढ़ी वाला एक बूढ़ा भी अपने सिर आगे बढ़ाते हुए उन्हें झुका रहे थे।

(३)

प्रिंसेस से विदा लेकर कातावासोव के साथ, जो अब तक आ गया था, कोज़्निशेव ठसाठस भरे हुए डिब्बे में दाख़िल हुआ और गाड़ी चल दी।

त्सारीत्सिनो स्टेशन पर युवा लोगों के सहगान-दल ने, जो 'तुम्हारा यश बढ़े' गाना गा रहे थे, गाड़ी का स्वागत किया। फिर से स्वयंसेवकों ने सिर बाहर निकाले और झुकाये। किन्तु कोज़्निशेव ने उनकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया। स्वयंसेवकों के साथ उसका इतना अधिक वास्ता रहा था कि वे किस ढंग के लोग हैं, वह अच्छी तरह जानता था और उसे उनमें दिलचस्पी नहीं रही थी। दूसरी ओर, कातावासोव, जिसे अपनी विद्वत्तापूर्ण व्यस्तता के कारण स्वयंसेवकों की ओर ध्यान देने का अवसर नहीं मिला था, उनमें बहुत दिलचस्पी ले रहा था और उसने कोज़्निशेव से उनके बारे में पूछताछ की।

कोज़्निशेव ने उसे सलाह दी कि दूसरे दर्जे के डिब्बे में जाकर ख़ुद उनसे बातचीत कर ले। अगले स्टेशन पर कातावासोव ने ऐसा ही किया।

गाड़ी के रुकते ही उसने दूसरे दर्जे के डिब्बे में जाकर स्वयंसेवकों

से परिचय किया। वे डिब्बे के कोने में बैठे हुए ऊंचे-ऊंचे बातें कर रहे थे और सम्भवतः जानते थे कि मुसाफ़िरों और डिब्बे में आनेवाले कातावासोव का ध्यान उन पर केन्द्रित है। सबसे अधिक ऊंचे तो लम्बे क़द और धंसी छाती वाला नौजवान बोल रहा था। वह स्पष्टतः शराब के नशे में था और अपने दफ़्तर में घटी हुई किसी घटना के बारे में बता रहा था। उसके सामने गार्डों की फ़ौजी वर्दी की आस्ट्रिया के ढंग की क़मीज़ पहने अधेड़ उम्र का एक अफ़सर बैठा था। वह मुस्कराता हुआ नौजवान की बातें सुन रहा था और जब-तब उसे रोकता-टोकता था। तोपचियों की वर्दी पहने एक और अफ़सर सूटकेस पर उनके निकट बैठा था। चौथा सो रहा था।

नौजवान से बातचीत करने पर कातावासोव को पता चला कि वह मास्को का धनी व्यापारी है, जिसने बाईस साल की उम्र होने तक बहुत-सा पैसा उड़ा दिया था। कातावासोव को वह इसलिये अच्छा नहीं लगा कि नाज़ुक, बिगड़ा हुआ और कमज़ोर था। उसे स्पष्टतः, ख़ास तौर पर अब नशे की हालत में, इस बात का पूरा यक़ीन था कि वह बड़ी बहादुरी का कारनामा कर रहा है और बहुत ही अप्रिय ढंग से अपनी शेख़ी बघार रहा था।

दूसरे, अवकाशप्राप्त अफ़सर का भी कातावासोव पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा। पता चला कि इस आदमी ने ज़िन्दगी में सभी तरह के पापड़ बेले हैं। उसने रेलवे में काम किया था, कारिन्दा रहा था, ख़ुद भी फ़ैक्टरियां चलायी थीं, किसी तरह की आवश्यकता के बिना इन सभी चीज़ों की चर्चा चला रहा था और विद्वत्तापूर्ण शब्दों का बड़ा अटपटा उपयोग करता था।

इन दोनों से भिन्न तीसरा, यानी तोपची, कातावासोव को बहुत ही अच्छा लगा। वह बड़ा विनम्र और ख़ामोश क़िस्म का आदमी था, गार्ड सेना के अवकाशप्राप्त अफ़सर के ज्ञान और नौजवान व्यापारी के वीरतापूर्ण आत्मबलिदान से स्पष्टतः बहुत प्रभावित था और अपने बारे में कुछ नहीं कहता था। कातावासोव ने उससे जब यह पूछा कि किस चीज़ ने उसे सेर्बिया जाने की प्रेरणा दी है, तो उसने विनम्र-सा उत्तर दिया –

"सभी तो जा रहे हैं। सेर्बों की भी सहायता करनी चाहिये। दया आती है।"

"हां, आप जैसे तोपचियों की तो वहां ख़ास कमी है," कातावासोव ने कहा।

"मैंने बहुत थोड़े समय तक ही तोपची का काम किया है। हो सकता है कि पैदल या घुड़सेना में जगह मिल जाये।"

"पैदल सेना में किसलिये, जबकि तोपचियों की ही सबसे ज़्यादा ज़रूरत है?" कातावासोव ने तोपची की उम्र से यह अनुमान लगाते हुए कि उसका ख़ासा ऊंचा पद होना चाहिये, अपनी राय ज़ाहिर की।

"मैं तोपख़ाने में बहुत कम समय तक रहा हूं, अवकाशप्राप्त कैडेट हूं," उसने कहा और यह स्पष्ट करने लगा कि क्यों वह अभिजात सैनिक विद्यालय की परीक्षा नहीं दे पाया था।

इन सभी चीज़ों ने मिलकर कातावासोव के मन पर अप्रिय प्रभाव डाला और स्वयंसेवक जब शराब पीने के लिये स्टेशन पर उतरे, तो कातावासोव ने चाहा कि किसी से बातचीत करके अपने मन पर पड़ी इस बुरी छाप की जांच करे। फ़ौजी ओवरकोट पहने एक बूढ़ा मुसाफ़िर स्वयंसेवकों के साथ कातावासोव की बातचीत सुनता रहा था। डिब्बे में जब वे दोनों ही रह गये, तो कातावासोव ने उसे सम्बोधित किया।

"देखिये तो कितनी अलग-अलग सामाजिक स्थितिवाले लोग वहां जा रहे हैं," कातावासोव ने अपनी राय ज़ाहिर करने और साथ ही बुज़ुर्ग के विचार जानने के लिये अस्पष्ट ढंग से कहा।

बूढ़ा फ़ौजी आदमी था और दो युद्धों में भाग ले चुका था। उसे मालूम था कि फ़ौजी आदमी कैसा होता है और इन स्वयंसेवक महानुभावों की शक्ल-सूरत और बातचीत तथा जिस दिलेरी से ये शराब की बोतल की ओर लपकते थे, वह इन्हें बुरे फ़ौजी मानता था। इसके अलावा वह एक प्रान्तीय नगर का रहनेवाला था और यह बताना चाहता था कि फ़ौज से अलग किया गया एक सैनिक, जो पियक्कड़ और चोर था तथा जिसे कोई भी अपने यहां नौकरी देने को तैयार नहीं था, स्वयंसेवक बनकर मोर्चे पर चला गया था। किन्तु अपने अनुभव से यह जानते हुए कि समाज की तत्कालीन मनःस्थिति में सामान्य मत के विरुद्ध राय प्रकट करना और विशेषतः स्वयंसेवकों

को भला-बुरा कहना ख़तरनाक है, उसने भी कातावासोव के साथ बातचीत में बड़ी सावधानी से काम लिया।

"ख़ैर, वहां लोगों की ज़रूरत है," बूढ़े फ़ौजी ने आंखों में हंसते हुए कहा। दोनों ने नवीनतम सैनिक समाचार की चर्चा शुरू कर दी और दोनों एक-दूसरे के सामने इस बात की अपनी उलझन को छिपाते रहे कि यदि नवीनतम समाचार के अनुसार सभी मोर्चों पर तुर्कों को कुचल दिया गया है, तो अगले दिन किसके साथ लड़ाई लड़ी जायेगी। और इस तरह दोनों ही अपना मत व्यक्त किये बिना अलग हो गये।

अपने डिब्बे में लौटने पर कातावासोव ने अनचाहे ही कपट करते हुए कोज़्निशेव को स्वयंसेवकों के बारे में अपने मन पर अंकित हुए प्रभाव बताये, जिनसे यही नतीजा निकलता था कि वे बहुत बढ़िया जवान लोग हैं।

बड़े नगर के स्टेशन पर गानों और हुर्रा की आवाज़ों से फिर स्वयंसेवकों का स्वागत हुआ, फिर से चन्दा जमा करनेवाले पुरुष और नारियां डिब्बे लिये हुए दिखाई दिये, गुबेर्निया की महिलाओं ने स्वयंसेवकों को गुलदस्ते भेंट किये और उनके पीछे-पीछे जलपान कक्ष में गयीं। किन्तु मास्को की तुलना में यह सब कम उत्साह और छोटे पैमाने पर हुआ।

(४)

गुबेर्निया के मुख्य नगर के स्टेशन पर जलपान कक्ष में जाने के बजाय कोज़्निशेव प्लेटफ़ार्म पर इधर-उधर टहलने लगा।

व्रोन्स्की के डिब्बे के सामने से पहली बार गुज़रते हुए उसने देखा कि खिड़की पर पर्दा पड़ा है। किन्तु दूसरी बार वहीं से गुज़रने पर उसने बूढ़ी काउंटेस को खिड़की के पास देखा। काउंटेस ने कोज़्निशेव को अपने पास बुलाया।

"इसे कूर्स्क तक विदा करने जा रही हूं," काउंटेस ने कहा।

"हां, मैंने सुना है," कोज़्निशेव ने खिड़की के क़रीब रुकते और डिब्बे में झांकते हुए कहा। "कितना शानदार काम किया है यह उसने!" यह देखकर कि व्रोन्स्की डिब्बे में नहीं है, उसने इतना और जोड़ दिया।"

"ऐसी बदक़िस्मती के बाद वह और कर ही क्या सकता था?"

"कैसी भयानक बात हुई है!" कोज़्निशेव ने कहा।

"ओह, कैसी मुसीबत का सामना करना पड़ा है मुझे! आप भीतर आ जाइये न... ओह, कैसी मुसीबत का सामना करना पड़ा है मुझे!" कोज़्निशेव के भीतर आ जाने और उसके निकट सोफ़े पर बैठ जाने के बाद उसने दोहराया। "इसकी तो कल्पना ही नहीं की जा सकती! छः हफ़्तों तक उसने किसी से बात ही नहीं की और मेरे बेहद मिन्नत करने पर ही कुछ खाया-पिया। एक मिनट को भी उसे अकेले नहीं छोड़ा जा सकता था। हमने वे सभी चीज़ें उसकी पहुंच के बाहर कर दी थीं, जिनसे वह अपनी हत्या कर सकता था। हम पहली मंज़िल पर रहते थे, फिर भी हमें हर समय चिन्ता बनी रहती थी। आप तो जानते ही हैं कि इसी औरत के लिये वह एक बार पहले भी अपने को गोली मार चुका था," बुढ़िया ने कहा और इस बात के याद आने पर उसकी त्योरी चढ़ गयी। "हां, उसने अपना अन्त भी वैसे ही किया है, जैसी इस तरह की औरत से उम्मीद की सकती थी। मौत भी उसने घटिया और कमीनी चुनी।"

"इसका निर्णय हम नहीं कर सकते, काउंटेस," कोज़्निशेव ने निश्वास छोड़ते हुए कहा। "मगर मैं समझ सकता हूं कि आपके लिये यह कितनी बड़ी यातना थी।"

"ओह, कुछ न कहिये! मैं अपनी जागीर पर रह रही थी और अलेक्सेई भी मेरे पास था। उसके नाम रुक्क़ा आया। उसने जवाब लिखकर भेज दिया। हमें बिल्कुल मालूम नहीं था कि वह ख़ुद भी यहीं स्टेशन पर थी। रात होने पर मैं अपने कमरे में गयी ही थी कि मेरी नौकरानी मेरी ने मुझे बताया कि स्टेशन पर एक महिला ने गाड़ी के नीचे आकर अपनी जान दे दी है। मेरा तो कलेजा धक से रह गया! मैं समझ गयी कि उसी ने ऐसा किया है। सबसे पहली बात मैंने यही कही कि अलेक्सेई को कोई भी यह ख़बर न बताये। मगर वे बता चुके थे। उसका कोचवान वहीं था और उसने सब कुछ अपनी आंखों से देखा था। जब मैं भागकर उसके कमरे में गयी, तो वह जैसे बिल्कुल बदल गया था – उसकी तरफ़ देखते हुए डर लगता था। मुंह से एक शब्द भी कहे बिना वह सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ

स्टेशन पर पहुंचा। वहां क्या हुआ, मुझे मालूम नहीं, मगर उसे मुर्दे की हालत में वहां से लाया गया। मैं उसे पहचान ही न सकती। डाक्टर का कहना था कि prostration complète* थी। बाद में लगभग उन्मादी की सी स्थिति हो गयी।

"ओह, क्या चर्चा की जाये!" काउंटेस ने हाथ झटककर कहा। "बहुत ही बुरा वक़्त था! चाहे कुछ भी क्यों न कहिये, बहुत बुरी औरत थी। ऐसे हताशापूर्ण भावावेश, यह भी कोई बात हुई! यह सब विशेष रूप से कुछ सिद्ध करने के लिये किया। सो उसने सिद्ध कर दिया। ख़ुद को और दो अन्य बढ़िया आदमियों – अपने पति और मेरे बदक़िस्मत बेटे को बरबाद कर दिया।"

"उसके पति का क्या हाल है?" कोज़्निशेव ने पूछा।

"उसने उसकी बेटी ले ली है। अल्योशा शुरू में हर चीज़ के लिये सहमत था। मगर अब बहुत दुखी है कि उसने एक पराये व्यक्ति को अपनी बेटी दे दी। अपना वचन वह वापस ले नहीं सकता। दफ़न के वक़्त कारेनिन आया था। किन्तु हमने कोशिश की कि अल्योशा के साथ उसकी भेंट न हो। उसके लिये, पति के लिये, इसे सहन करना कुछ आसान ही है। उसने उसे मुक्त कर दिया था। किन्तु मेरे बेचारे बेटे ने तो अपने को पूरी तरह उसे ही समर्पित कर दिया था। अपना कैरियर छोड़ा, मुझे छोड़ा और उसने उस पर फिर भी दया नहीं की, जान-बूझकर उसे पूरी तरह मार ही डाला। चाहे कुछ भी कहिये, उसकी मौत भी – दीन-धर्म के बिना एक भयानक नारी की मौत है। भगवान मुझे क्षमा करें, मगर अपने बेटे को ऐसे बरबाद हुए देखकर मैं उस औरत की याद से नफ़रत किये बिना नहीं रह सकती।"

"लेकिन अब उसकी कैसी हालत है?"

"यह तो भगवान ने हमारी मदद की – इस सेर्बिया की जंग ने हमारी सहायता की। मैं बूढ़ी औरत हूं, इस मामले को कुछ नहीं समझती, मगर उसके लिये तो भगवान ने ही इसे भेजा है। ज़ाहिर है कि मां के नाते मेरा दिल डरता है और, जैसा कि सुनने में आया है,

---

*पूर्ण अवसन्नता। (फ़्रांसीसी)

ce n'est pas très bien vu à Petersbourg.* लेकिन किया क्या जाये! सिर्फ़ यही एक चीज़ उसे उबार सकी। उसका दोस्त याश्विन जुए में सब कुछ हार गया और सेर्बिया की लड़ाई में जाने को तैयार हो गया। वह उसके पास आया और उसे भी ऐसा करने को राज़ी कर लिया। अब इस चीज़ में उसकी दिलचस्पी है। कृपया आप उससे बात करें। मैं चाहती हूं कि उसका ध्यान बंटाया जाये। वह बहुत ही उदास है। एक और मुसीबत आ गयी कि उसके दांतों में दर्द होने लगा है। आपसे मिलकर उसे बहुत ख़ुशी होगी। कृपया उससे बात करें, वह इस तरफ़ घूम रहा है।"

कोज़्निशेव ने कहा कि वह ख़ुशी से ऐसा करेगा और गाड़ी के दूसरी ओर चला गया।

(५)

प्लेटफ़ार्म पर रखी बोरियों के ढेर की सन्ध्याकालीन तिरछी छाया में लम्बा कोट पहने, टोप को आंखों पर झुकाये और हाथ जेबों में डाले व्रोन्स्की पिंजरे में बन्द दरिन्दे की तरह इधर-उधर आ-जा रहा था और बीस क़दमों पर तेज़ी से वापस घूम जाता था। व्रोन्स्की के निकट जाने पर कोज़्निशेव को ऐसा लगा कि वह उसे देख रहा है, मगर ऐसे ज़ाहिर कर रहा है, मानो न देख रहा हो। कोज़्निशेव को इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था। व्यक्तिगत रूप से व्रोन्स्की के विरुद्ध उसके मन में किसी तरह का मैल नहीं था।

कोज़्निशेव की दृष्टि में व्रोन्स्की इस समय एक महान ध्येय के लिये एक महत्त्वपूर्ण कार्यकर्त्ता था और उसकी हिम्मत बढ़ाना तथा उसके इस काम की प्रशंसा करना वह अपना कर्त्तव्य मानता था। वह उसके पास गया।

व्रोन्स्की रुका, उसने ग़ौर से कोज़्निशेव को देखा, पहचाना और कुछ क़दम उसकी ओर आकर बहुत ही तपाक से उसके साथ हाथ मिलाया।

---

*पीटर्सबर्ग में इसे पसन्द नहीं किया जा रहा है। (फ़्रांसीसी)

"शायद आप मुझसे मिलना नहीं चाहते," कोज़्निशेव ने कहा, "लेकिन क्या मैं आपके किसी काम नहीं आ सकता?"

"अन्य किसी से भी मिलना मुझे इतना कम बुरा न लगता, जितना आपसे," व्रोन्स्की ने जवाब दिया। "मैं माफ़ी चाहता हूं। मेरे जीवन में कुछ भी मधुर नहीं है।"

"मैं यह समझता हूं और आपके लिये किसी तरह उपयोगी होना चाहता हूं," कोज़्निशेव ने व्रोन्स्की के स्पष्टतः व्यथित चेहरे को ध्यान से देखते हुए कहा। "आपको रीस्तिच या मीलन के नाम पत्र की तो ज़रूरत नहीं?"

"ओह, नहीं!" बड़ी मुश्किल से यह बात समझ पाते हुए व्रोन्स्की ने कहा। "यदि आपको आपत्ति न हो, तो हम चहलक़दमी करेंगे। रेल के डिब्बों में बड़ी उमस है। पत्र? नहीं, शुक्रिया। मरने के लिये सिफ़ारिश की ज़रूरत नहीं। हां, तुर्कों के नाम हो, तो बात दूसरी है..." केवल होंठों से ही मुस्कराते हुए उसने कहा। आंखों में क्रोधपूर्ण व्यथा का भाव बना रहा।

"किन्तु शायद आपके लिये ऐसे व्यक्ति के साथ सम्बन्ध स्थापित करना, जो ज़रूरी होगा, आसान रहेगा, जिससे पत्र द्वारा आपका परिचय करवा दिया गया हो। ख़ैर, जैसा आप ठीक समझें। आपके मोर्चे पर जाने के निर्णय के बारे में सुनकर मुझे बड़ी ख़ुशी हुई थी। स्वयंसेवकों के बारे में इतना कुछ उल्टा-सीधा कहा गया है कि आप जैसे व्यक्ति की बदौलत वे समाज की नज़रों में ऊंचे उठ जायेंगे।"

"व्यक्ति के रूप में मैं इसलिये काम का हूं," व्रोन्स्की ने कहा, "कि मेरे लिये ज़िन्दगी की कोई क़ीमत नहीं। मुझमें दुश्मन की क़तारों में घुस जाने, उन्हें मिटा देने या ख़ुद मिट जाने के लिये काफ़ी ताक़त है—यह मैं जानता हूं। मैं ख़ुश हूं कि किसी काम के लिये अपनी ज़िन्दगी दे सकता हूं, जिसकी मुझे न केवल ज़रूरत ही नहीं है, बल्कि जिससे मैं नफ़रत भी करता हूं। किसी के काम आ जायेगी।"—और उसने लगातार टीसते तथा उस ढंग से बोलने में, जैसे वह चाहता था, बाधा डालनेवाले दांत के कारण जबड़े को बेचैनी से हिलाया-डुलाया।

"मैं आपको अभी कहे देता हूं कि आपका नया जन्म हो जायेगा,"

कोज़्निशेव ने भाव-विह्वल होकर कहा। "अपने भाइयों को जुए से मुक्ति दिलाना एक ऐसा ध्येय है, जिसके लिये जीने और मरने में भी तुक है। भगवान आपको लड़ाई में सफलता और मानसिक शान्ति दें," उसने अन्तिम शब्द और जोड़ दिये तथा व्रोन्स्की की तरफ़ हाथ बढ़ाया।

व्रोन्स्की ने अपनी ओर बढ़े हुए कोज़्निशेव के हाथ को तपाक से दबाया।

"हां, एक साधन के रूप में मैं काम आ सकता हूं, मगर इन्सान के रूप में खण्डहर हूं," उसने धीरे-धीरे कहा।

मज़बूत दांत का कसकता हुआ दर्द, जिससे उसका मुंह थूक से भर जाता था, उसके बात करने में बाधक हो रहा था। वह कोयले-पानी के डिब्बे के धीरे-धीरे और रवानी से रेलों पर चलते आ रहे पहियों को देखता हुआ चुप हो गया।

और अचानक दर्द ने नहीं, बल्कि यातनापूर्ण आन्तरिक बेचैनी ने उसे क्षण भर को दांत के दर्द के बारे में भूल जाने को विवश कर दिया। कोयले-पानी के डिब्बे और रेल-लाइनों को देखकर तथा उस व्यक्ति के साथ बातचीत के प्रभावस्वरूप, जिससे अपने दुर्भाग्य के बाद उसकी भेंट नहीं हुई थी, उसे सहसा "उसकी" या शायद यों कहना बेहतर होगा कि उस समय "उसका" जो कुछ शेष रह गया था, जब वह पागल की तरह रेलवे स्टेशन पर भागा गया था, उसकी याद आ गयी – पराये लोगों के बीच बेहयाई से मेज़ पर पड़ा हुआ लहू-लुहान जिस्म, जो कुछ ही समय पहले तक जीवित होने के कारण अभी तक गर्म था। भारी चोटियों और कनपटियों पर घुंघराले बालों वाला पीछे को लटका सिर, जो बिल्कुल सही-सलामत था, और अध-खुले लाल मुंह वाले बहुत ही सुन्दर चेहरे पर वह अजीब-सा भाव, जो होंठों पर दयनीयता और खुली रह गयी आंखों में भयानकता लिये था, मानो उनके अन्तिम झगड़े के समय कहे गये उसके इन शब्दों को अभिव्यक्त कर रहा था कि वह पछतायेगा।

और उसने उसे उस रूप में स्मरण करने का प्रयत्न किया, जिस रूप में स्टेशन पर ही हुई पहली भेंट के समय पाया था – रहस्यपूर्ण, बहुत ही कमनीय, प्रेमपूर्ण, सुख पाने और सुख देने के लिये आतुर, न कि कठोर और प्रतिशोध की इच्छुक, जैसी कि वह अन्तिम समय

में उसे याद रह गयी थी। उसने उसके साथ बिताये गये मधुर क्षणों को याद करने का प्रयास किया, किन्तु इन क्षणों में सदा के लिये ज़हर घुल गया था। उसे वह ऐसी विजेत्री के रूप में ही याद आयी, जिसने अमिट पश्चाताप की उस धमकी को, जिसकी किसी को आवश्यकता नहीं थी, व्यावहारिक रूप दे दिया था। दांत का दर्द अब उसे महसूस नहीं हो रहा था और सिसकियों से उसका चेहरा विकृत हो गया था।

बोरियों के ढेर के पास चुपचाप एक-दो चक्कर लगाने और अपने को सम्भालने के बाद उसने शान्ति से कोज़्निशेव को सम्बोधित किया –

"कल के बाद आपको कोई नया समाचार नहीं मिला न? हां, तीन बार उनके दांत खट्टे कर दिये गये हैं, मगर निर्णायक लड़ाई तो कल होनेवाली है।"

और मीलन के सम्राट घोषित किये जाने तथा इसके फलस्वरूप सम्भव होनेवाले बहुत ही महत्त्वपूर्ण परिणामों की चर्चा करने के बाद दूसरी घण्टी बजने पर वे अपने-अपने डिब्बों में लौट गये।

(६)

यह न जानते हुए कि मास्को से कब गांव जाना सम्भव होगा कोज़्निशेव ने अपने भाई लेविन को इस आशय का तार नहीं भेजा था कि कोई स्टेशन पर आ जाये। स्टेशन से किराये पर ली हुई घोड़ा-गाड़ी में कोज़्निशेव और कातावासोव रास्ते की धूल से लथ-पथ तथा नीग्रो की तरह काले होकर जब दिन के बारह बजे पोक्रोव्स्कोये गांव के घर के दरवाज़े पर पहुंचे, तो लेविन घर में नहीं था। अपने पिता और बहन के साथ छज्जे में बैठी हुई कीटी ने अपने जेठ को पहचान लिया और उसके स्वागत को भागी हुई नीचे गयी।

"आपको शर्म आनी चाहिये कि अपने आने की ख़बर नहीं दी," कोज़्निशेव से हाथ मिलाते और चूमने के लिये माथा उसकी ओर बढ़ाते हुए कीटी ने कहा।

"हम ख़ूब मज़े में पहुंच गये और आप लोगों को कोई तकलीफ़ नहीं हुई," कोज़्निशेव ने उत्तर दिया। "मुझ पर इतनी धूल-मिट्टी

पड़ी हुई है कि तुम्हें छूते हुए घबराता हूं। मैं इतना अधिक व्यस्त था कि कब वहां से निकल पाऊंगा, नहीं जानता था। और आप लोग पहले की तरह अपनी अलग-थलग दुनिया में सुख-शान्ति की ज़िन्दगी बिता रहे हैं," उसने मुस्कराकर कहा। "और हमारे ये मित्र फ़्योदोर वसील्येविच भी आख़िर यहां आ ही गये।"

"मैं नीग्रो नहीं हूं, हाथ-मुंह धोने के बाद फिर इन्सान जैसा हो जाऊंगा," कातावासोव ने अपने सामान्य विनोदी ढंग से हाथ मिलाते और धूल से काले हुए चेहरे के कारण विशेष रूप से चमकते दांतों की झलक देते हुए मुस्कराकर कहा।

"कोस्त्या को बहुत ख़ुशी होगी। वह फ़ार्म पर गया है। आनेवाला ही होगा।"

"खेतीबारी में ही लगा हुआ है। अपनी अलग-थलग दुनिया में," कातावासोव ने कहा। "और हमें शहर में सेर्बिया की जंग के सिवा और कुछ दिखाई ही नहीं देता। और मेरे दोस्त की इस बारे में क्या राय है? निश्चय ही और लोगों जैसी तो नहीं?"

"वैसी ही, और लोगों जैसी ही राय है उसकी," तनिक परेशानी से कोज़्निशेव की ओर देखते हुए कीटी ने उत्तर दिया। "तो मैं कोस्त्या को बुला लाने के लिये किसी को भेज देती हूं। हमारे यहां पापा आये हुए हैं। वे अभी-अभी विदेश से लौटे हैं।"

और लेविन को बुला लाने तथा एक मेहमान को अध्ययन-कक्ष तथा दूसरे को डौली के बड़े कमरे में हाथ-मुंह धोने के लिये ले जाने और नाश्ता तैयार करवाने की हिदायतें देकर कीटी तेज़ी से चलने-फिरने के अपने अधिकार का उपयोग करते हुए, जिससे वह गर्भावस्था के समय वंचित कर दी गयी थी, छज्जे की ओर भाग गयी।

"सेर्गेई इवानोविच और प्रोफ़ेसर कातावासोव आये हैं," उसने कहा।

"ओह, ऐसी गर्मी में यह तो मुसीबत है!" प्रिंस ने कहा।

"नहीं, पापा, वह बहुत अच्छा आदमी है और कोस्त्या को बहुत पसन्द है," कीटी ने पापा के चेहरे पर व्यंगात्मक भाव देखकर मानो उससे किसी बात का अनुरोध करते हुए मुस्कराकर कहा।

"मुझे कोई आपत्ति नहीं।"

"मेरी प्यारी, तुम जाकर ज़रा उनकी चिन्ता करो," कीटी ने बहन से कहा। "उनकी स्टेशन पर स्तीवा से मुलाक़ात हुई थी, वह ठीक-ठाक है। मैं मीत्या के पास भागती हूं। मैंने, मुसीबत की मारी ने, नाश्ते के बाद उसे दूध नहीं पिलाया। वह अब जाग गया होगा और ज़रूर ही चिल्ला रहा होगा।" और स्तनों में दूध उतरता हुआ अनुभव करके वह तेज़ क़दमों से बच्चे के कमरे की तरफ़ चल दी।

वास्तव में ही उसने अनुमान नहीं लगाया था (शिशु और उसके बीच अभी सम्पर्क-सूत्र बना हुआ था), बल्कि अपने स्तनों में दूध के प्रवाह से यक़ीनी तौर पर यह जान लिया था कि बेटा भूखा है।

बाल-कक्ष के निकट पहुंचने के पहले ही वह जानती थी कि मीत्या चिल्ला रहा है। और वास्तवं में ऐसा ही था। उसकी आवाज़ सुनकर उसने अपनी चाल और तेज़ कर दी। किन्तु वह जितनी तेज़ी से चलती थी, बेटा उससे अधिक ज़ोर से चिल्लाता था। यह अच्छी, स्वस्थ बच्चे की आवाज़ थी, मगर भूख और बेसब्री को ज़ाहिर करनेवाली।

"आया, यह बहुत देर से, बहुत देर से जागा हुआ है क्या?" कीटी ने कुर्सी पर बैठते और दूध पिलाने के लिये तैयार होते हुए जल्दी-जल्दी पूछा। "इसे जल्दी से मुझे दो। ओह, आया, कितनी सुस्त हैं आप, इसकी टोपी बाद में बांध दें!"

बच्चा भूख के कारण गला फाड़कर चिल्ला रहा था।

"नहीं, ऐसा करना तो ठीक नहीं है, मालकिन," अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने कहा, जो लगभग हमेशा ही बाल-कक्ष में विद्यमान रहती थी, "इसे ढंग से कपड़े-लत्ते पहना लेने चाहिये। आ, आ!" मां की तरफ़ कोई ध्यान दिये बिना वह बच्चे के निकट जाकर लोरी-सी गाने लगी।

आया बच्चे को मां के पास ले चली। अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना स्नेह-द्रवित चेहरे के साथ उसके पीछे-पीछे हो ली।

"जानता है, जानता है। भगवान साक्षी है, येकातेरीना अलेक्सान्द्रोव्ना, उसने मुझे पहचान लिया है!" अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने बच्चे के चीख़ने-चिल्लाने से अपनी आवाज़ अधिक ऊंची करते हुए कहा।

किन्तु कीटी उसके शब्द नहीं सुन रही थी। बच्चे की उतावली की तरह उसकी अपनी उतावली भी बढ़ती जा रही थी।

इसी उतावली के कारण देर तक बात नहीं बनी। बच्चा स्तन को मुंह में नहीं ले पा रहा था और खीझता था।

आख़िर बेदम होते हुए ज़ोर से चीख़ने और उच्छू आने के बाद बच्चे ने स्तन मुंह में ले लिया, मां-बच्चे को एकसाथ चैन मिला और दोनों शान्त हो गये।

"यह बेचारा भी पसीने-पसीने हो गया है," बच्चे को छूते हुए कीटी ने फुसफुसाकर कहा। "आप ऐसा क्यों सोचती हैं कि वह आपको पहचानता है?" कीटी ने आगे को खिसक आई टोपी के नीचे से, जैसा कि उसे लगा धूर्त्ततापूर्वक देखती हुई बच्चे की आंखों, समगति से फूलते गालों और लाल हथेलीवाले छोटे-से हाथ को, जिससे वह चक्र-से बना रहा था, कनखियों से देखते हुए अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना से पूछा।

"ऐसा नहीं हो सकता! अगर पहचान सकता, तो मुझे ही पहचानता," अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना के फिर से ऐसा दावा करने पर कीटी ने कहा और मुस्करा दी।

कीटी इसलिये मुस्करायी कि यद्यपि वह यह कह रही थी कि बच्चा उसे नहीं पहचान सकता, तथापि मन में यह जानती थी कि वह केवल अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना को ही नहीं पहचानता, बल्कि सब कुछ जानता और समझता है तथा बहुत कुछ ऐसा जानता और समझता है, जो अन्य कोई नहीं जानता, और वह ख़ुद, बच्चे की मां भी केवल उसी की बदौलत वह सब जान और समझ पायी है। अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना, आया, नाना और अपने पिता के लिये भी मीत्या एक प्राणी था, जो केवल भौतिक देखभाल की मांग करता था, किन्तु मां के लिये वह बहुत पहले से ही विशेष नैतिक लक्षण रखनेवाला जीव था, जिसके साथ उसके मानसिक सम्बन्धों की पूरी कहानी विद्यमान थी।

"भगवान ने चाहा तो उसके जागने पर आप स्वयं ही देख लेंगी। मैं जैसे ही यों करती हूं, वह मेरा लाड़ला खिल उठता है। उज्ज्वल भोर की भांति खिल उठता है," अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना ने कहा।

"अच्छी बात है, अच्छी बात है, तब देख लेंगे," कीटी ने फुसफुसाकर कहा। "अब जाइये, उसकी आंख लग रही है।"

(७)

अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना दबे पांव बाहर चल गयी, आया ने पर्दा नीचे गिरा दिया, पलंग के ऊपर तने मलमल के चंदवे के नीचे से मक्खियों और खिड़की के शीशे से टकराते हुए ततैये को बाहर निकाला और बैठकर भोज की मुरझायी टहनी से मां-बेटे को पंखा झलने लगी।

"ओह गर्मी, कैसी गर्मी है! भगवान करें, कुछ पानी ही बरस जाये," उसने कहा।

"हां, हां, शी ..." कीटी ने केवल इतना ही उत्तर दिया और तनिक हिल-डुलकर मीत्या के छोटे से गुदगुदे हाथ को प्यार से दबाया, जिसे मानो धागे के टुकड़े से कलाई के गिर्द कसकर बांध दिया गया था और जिसको वह अपनी प्यारी आंखों को कभी खोलते और कभी बन्द करते हुए अभी भी धीरे-धीरे हिला रहा था। यह हाथ कीटी को परेशान कर रहा था। वह उसे चूमना चाहती थी, मगर इसलिये ऐसा करते हुए डरती थी कि बच्चा कहीं जाग न जाये। आख़िर हाथ का हिलना-डुलना बन्द हो गया और बच्चे की आंखें मुंद गयीं। स्तन-पान जारी रखते हुए बच्चा केवल कभी-कभी अपनी लम्बी, कमान की तरह टेढ़ी बरौनियों को ऊपर उठाकर अध-अंधेरे कमरे में काली और नम प्रतीत होनेवाली आंखों से मां की ओर देख लेता। आया ने भोज की टहनी से पंखा झलना बन्द कर दिया और ऊंघ गयी। ऊपर की मंज़िल से बूढ़े प्रिंस की ऊंची आवाज़ और कातावासोव का ज़ोर से हंसना सुनायी दिया।

"लगता है कि मेरे बिना ही उनके बीच पटरी बैठ गयी है," कीटी ने सोचा, "फिर भी बड़ी बुरी बात है कि कोस्त्या घर पर नहीं है। ज़रूर फिर से मधुमक्खी पालक के यहां चला गया होगा। बेशक यह अफ़सोस की बात है कि वह अक्सर वहां जाता है, फिर भी मैं ख़ुश हूं। इससे उसका मन बहलता है। वसन्त के दिनों की तुलना में वह अब बेहतर और अधिक ख़ुश नज़र आता है।

तब तो वह इतना उदास और ऐसे व्यथित रहता था कि मुझे उसके लिये भय अनुभव होने लगा था। और कैसा अजीब है वह!" कीटी मुस्कराते हुए फुसफुसायी।

वह जानती थी कि कौन-सी चीज़ उसके पति को यातना देती रहती थी। यह उसकी नास्तिकता थी। अगर उससे यह कहा जाता कि भगवान में आस्था न हो पाने पर अगले जीवन में कोस्त्या का बुरा हाल होगा, तो उसे सहमत होना पड़ता कि उसका बुरा हाल होगा। फिर भी उसकी अनास्था से वह परेशान नहीं होती थी। यह मानते हुए कि नास्तिक के लिये कोई मुक्ति-मार्ग नहीं और अपने पति की आत्मा को दुनिया में सबसे अधिक प्यार करते हुए भी वह मुस्कान के साथ उसकी नास्तिकता के बारे में सोचती और अपने आपसे कहती थी कि वह अजीब है।

"किसलिये वह सारा साल दर्शनशास्त्र की किताबें पढ़ता रहता है?" वह सोच रही थी। "अगर यह सब कुछ इन किताबों में लिखा है, तो वह समझ सकता है। अगर उनमें सचाई नहीं है, तो उन्हें पढ़ा ही क्यों जाये? वह खुद यह कहता है कि भगवान में विश्वास करना चाहता है। तो किसलिये विश्वास नहीं करता? शायद इसीलिये कि बहुत अधिक सोचता है? और सोचता इसलिये अधिक है कि अकेला, हमेशा अकेला ही रहता है। हम लोगों के साथ वह सारी बात नहीं कर सकता। मेरे ख़्याल में इन मेहमानों, विशेषतः कातावासोव के आने से उसे ख़ुशी होगी। उसके साथ विचार-विनिमय करना उसे अच्छा लगता है," उसने सोचा और उसी समय उसके दिमाग़ में यह ख़्याल आया कि कातावासोव के सोने की व्यवस्था करना कहां अधिक सुविधाजनक होगा – अलग कमरे में या कोज़्निशेव के साथ ही। इस विचार के आते ही सहसा एक अन्य विचार भी उसके मस्तिष्क में कौंध गया, जिसने उसे व्याकुलता से सिहरने और मीत्या की नींद में भी ख़लल डालने को विवश कर दिया, जिसने इसी कारण कड़ाई से कीटी की तरफ़ देखा। "लगता है कि धोबिन कपड़े नहीं लाई और मेहमानों के बिस्तरों के लिये धुली हुई चादरें और गिलाफ़ नहीं हैं। अगर मैं कहूंगी नहीं, तो अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना कोज़्निशेव के बिस्तर पर इस्तेमाल की हुई चादर बिछा देगी," और इस ख़्याल से ही उसके गाल लाल हो उठे।

"हां, मैं उसे हिदायत दे दूंगी," उसने निर्णय किया और अपने पहले विचारों की ओर लौटते हुए उसे याद आया कि कोई महत्त्वपूर्ण,

घनिष्ठ मानसिक बात रह गयी है, जिस पर उसने अन्त तक विचार नहीं किया था और वह याद करने लगी। "हां, नास्तिक कोस्त्या," उसे फिर मुस्कराते हुए स्मरण हो आया।

"हां, नास्तिक है! यही ज़्यादा अच्छा है कि वह मदाम श्ताल जैसा या जैसी कि मैं विदेश में बनना चाहती थी, वैसा बनने के बजाय हमेशा ऐसा ही बना रहे। नहीं, वह ढोंग नहीं करेगा।"

और कुछ ही समय पहले सामने आया हुआ उसकी उदारता का एक लक्षण उसके सम्मुख सजीव हो उठा। दो सप्ताह पहले डौली को ओब्लोन्स्की का पश्चातापपूर्ण पत्र मिला था। उसमें उसने इस बात की मिन्नत की थी कि वह उसकी इज़्ज़त बचा ले, अपनी जागीर बेचकर उसके ऋण चुका दे। डौली बहुत बुरी तरह परेशान हो उठी, अपने पति से उसे घृणा हुई, उसे तिरस्कार से देखने लगी, उस पर दया आई, तलाक़ लेने और इन्कार कर देने का निर्णय किया, मगर अन्त में अपनी जागीर का एक भाग बेचने के लिये राज़ी हो गयी। इसके बाद कीटी को बरबस ही स्नेहपूर्ण मुस्कान के साथ अपने पति की परेशानी की याद हो आयी, कैसे उसने उसके मन पर छाये हुए इस प्रश्न को उठाने के अनेक बार अटपटे प्रयास किये और आख़िर डौली के मन को ठेस लगाये बिना उसकी सहायता का एकमात्र साधन ढूंढ़ते हुए कीटी के सामने यह सुझाव रखा कि वह डौली को अपने हिस्से की जागीर दे दे और कीटी को यह बात नहीं सूझी थी।

"वह भी कोई नास्तिक है? उसके जैसा दिल रखनेवाला, बच्चे तक का दिल दुखाते हुए डरनेवाला! सब कुछ औरों के लिये, अपने लिये कुछ भी नहीं। सेर्गेई इवानोविच यही समझता है कि उसका कारिन्दा होना कोस्त्या का कर्त्तव्य है। उसकी बहन भी ऐसा ही मानती है। अब डौली और उसके बच्चों की भी वही सरपरस्ती कर रहा है। वे सभी किसान भी, जो हर दिन उसके पास आते हैं, मानो उनकी सेवा करना भी उसका कर्त्तव्य है।"

"हां, तुम भी ऐसा ही बनना, जैसा तुम्हारा पिता है, ऐसा ही," मीत्या को आया को सौंपते और उसके गाल से होंठ छुआते हुए उसने कहा।

उस क्षण से, जब लेविन ने मृत्यु-शय्या पर पड़े प्यारे भाई को देखते हुए पहली बार जीवन और मृत्यु के प्रश्नों को, उसके शब्दों में, उन नई आस्थाओं के अनुसार देखना शुरू किया, जिन्होंने बीस से चौंतीस वर्ष की आयु में अनजाने ही उसके बचपन तथा किशोरावस्था के विश्वासों की जगह ले ली थी, उस क्षण से वह मौत के सम्बन्ध में तो इतना नहीं, जितना ज़िन्दगी के बारे में – कि उसका स्रोत क्या है, उद्देश्य क्या है, वह किसलिये है और उसका रूप क्या है – मामूली-से ज्ञान के अभाव के कारण स्तम्भित रह गया। शरीर, उसका नाश, पदार्थ की अनश्वरता, शक्ति-संरक्षण का नियम, विकास – ये वे शब्द थे, जिन्होंने उसके पहले के विश्वास का स्थान ले लिया था। ये शब्द और इनके साथ जुड़ी हुई धारणायें बौद्धिक लक्ष्यों की दृष्टि से तो बहुत अच्छी थीं, किन्तु जीवन के लिये कुछ भी नहीं देती थीं। लेविन ने अचानक अपने को ऐसे व्यक्ति की स्थिति में अनुभव किया, जो फ़र-कोट के बदले में मलमल की पोशाक लेकर पहन लेता है और पहली बार पाले में जाने पर तर्क-वितर्क से नहीं, बल्कि अपने समूचे व्यक्तित्व से यह मानने को विवश हो जाता है कि वह नंगे जैसा ही है और उसका अवश्य ही यातनापूर्ण अन्त हो जायेगा।

उस क्षण से, यद्यपि लेविन को इस बात की चेतना नहीं थी और वह पहले की तरह ही अपना जीवन बिताता रहा, वह अपनी इस अज्ञानता के कारण निरन्तर भय अनुभव करता रहा था।

इसके अतिरिक्त वह अस्पष्ट रूप से यह भी अनुभव करता था कि जिस चीज़ को वह अपने विश्वास कहता था, वह केवल अज्ञानता ही नहीं, बल्कि सोचने का ऐसा ढंग था, जिसके अनुसार वह ज्ञान पाना सम्भव ही नहीं था, जिसकी उसे आवश्यकता थी।

शादी के बाद के पहले समय में नई ख़ुशियों और ज़िम्मेदारियों ने इन विचारों को पूरी तरह से उसके दिमाग़ से निकाल दिया, किन्तु पिछले समय में पत्नी के प्रसवकाल की समाप्ति के बाद, जब वह किसी काम के बिना मास्को में रह रहा था, यह प्रश्न अधिकाधिक बार तथा अधिकाधिक ज़ोर से समाधान की मांग करने लगा।

उसके सामने प्रश्न यह था – "यदि मैं उन उत्तरों को स्वीकार नहीं करता हूं, जो मेरे जीवन के बारे में ईसाई धर्म देता है, तो मैं किन उत्तरों को मान्यता देता हूं?" और उसे अपनी मान्यताओं के पूरे भण्डार में न केवल कोई उत्तर ही, बल्कि उनसे मिलता-जुलता भी कुछ नहीं मिल सका।

वह उस व्यक्ति के समान था, जो खिलौनों और बन्दूक़ों की दुकानों पर खाने-पीने की चीज़ों की खोज करता हो।

अनचाहे और अचेतन रूप से वह अब हर पुस्तक, हर बातचीत और हर व्यक्ति में इन प्रश्नों से सम्बन्धित रवैये और इनके समाधान ढूंढ़ता।

इस सिलसिले में जिस बात से उसे सबसे बड़ी हैरानी और दुख होता, वह यह थी कि उसके हलक़े और उम्र के लोग उसी की भांति अपनी पहली मान्यताओं की जगह नई आस्थाओं को स्वीकार करके उसमें कोई परेशानी नहीं अनुभव करते थे और पहले की भांति ही बिल्कुल ख़ुश और शान्त थे। तो इस तरह मुख्य प्रश्न के अतिरिक्त उसे ये प्रश्न भी परेशान करते थे – ऐसे लोग निष्कपट हैं या नहीं? वे ढोंग तो नहीं करते? या फिर उसकी तुलना में वे अधिक स्पष्टता से उन उत्तरों को समझते हैं, जो उसे विह्वल करनेवाले प्रश्नों के लिये विज्ञान प्रस्तुत करता है? और वह इन लोगों के विचारों तथा इन उत्तरों को अभिव्यक्ति देनेवाली किताबों को बहुत ध्यान से पढ़ता।

जब से ये प्रश्न उसके मन का मन्थन करने लगे थे, तब से उसे यह पता चल गया था कि अपनी किशोरावस्था, अपने विश्वविद्यालय के हलक़े से सम्बन्धित स्मृतियों के आधार पर ऐसा निष्कर्ष निकालकर उसने ग़लती की थी कि धर्म का समय बीत चुका है और अब उसका कोई अस्तित्व नहीं रहा। अच्छा जीवन बितानेवाले और उसके सभी घनिष्ठ लोग भगवान में आस्था रखते थे। बूढ़े प्रिंस, ल्वोव, जो उसे बेहद पसन्द था, कोज़्निशेव भी, सभी महिलायें और उसकी पत्नी भी वैसे ही आस्था रखती थी, जैसे वह अपने बचपन की पहली अवस्था में। रूसी जनता के निन्यानवे प्रतिशत लोग, ऐसे साधारण लोग आस्थावान थे, जिनका जीवन उसके मन में अधिकतम आदर-भावना पैदा करता था।

दूसरी बात यह थी कि बहुत-सी किताबें पढ़ने पर उसे इस बात का विश्वास हो गया था कि उसके समान दृष्टिकोण रखनेवाले लोग अपने विचारों को उससे कुछ अधिक नहीं समझते थे और अपने लिये कुछ भी स्पष्ट किये बिना उन प्रश्नों की ही अवहेलना कर देते थे, जिनके उत्तर पाये बिना उसे यह अनुभव होता था कि वह ज़िन्दा नहीं रह सकता और बिल्कुल दूसरी ही समस्यायें हल करने की कोशिश करते थे, जिनमें उसे दिलचस्पी नहीं हो सकती थी। उदाहरण के लिये ऐसी समस्यायें थीं – प्राणियों का विकासक्रम और आत्मा की यन्त्रवत व्याख्या, आदि।

इसके अलावा पत्नी के प्रसवकाल में उसके लिये एक असाधारण बात हुई थी। वह नास्तिक व्यक्ति भगवान को याद करने लगा था और ऐसा करते समय उसमें आस्था रख रहा था। वह समय बीत गया और अपनी उस समय की मनःस्थिति को वह अपने जीवन में कोई स्थान नहीं दे पा रहा था।

वह इस बात को स्वीकार नहीं कर सकता था कि तब सत्य को जानता था और अब भूल कर रहा है, क्योंकि जैसे ही वह शान्त मन से इसके बारे में सोचना आरम्भ करता था, सब कुछ खण्ड-खण्ड होकर बिखर जाता था। वह यह भी नहीं स्वीकार सकता था कि उससे तब भूल हुई थी, क्योंकि अपनी उस समय की मनःस्थिति को मूल्यवान मानता था और उसे दुर्बलता का परिणाम कहकर वह उन क्षणों को कलुषित कर देता। वह स्वयं अपने मानसिक द्वन्द्व की यातना का शिकार था और इससे मुक्ति पाने के लिये अपनी आत्मा का पूरा ज़ोर लगा रहा था।

(९)

ये विचार उसे कभी बहुत अधिक और कभी कम परेशान तथा व्यथित करते, मगर हमेशा उसके दिमाग़ में बने रहते। वह पढ़ता और सोचता और जितना अधिक पढ़ता तथा सोचता, ख़ुद को अपने ध्येय से उतना ही अधिक दूर अनुभव करता।

यह विश्वास हो जाने पर कि भौतिकवादियों से उसे उत्तर नहीं

मिलेगा, उसने पिछले समय में मास्को और देहात में प्लाटो, स्पिनोज़ा, कान्ट, शेलिंग, हेगेल और शोपेनहार – यानी उन दार्शनिकों को पढ़ा और फिर से पढ़ा, जो जीवन की भौतिकवादी ढंग से व्याख्या नहीं करते हैं।

वह जब इन्हें पढ़ता या दूसरों की शिक्षा, विशेषतः भौतिकवादियों की शिक्षा के खण्डन के तर्क सोचता, तो उसे ये विचार फलप्रद लगते। किन्तु ज्योंही वह समस्याओं के समाधान के बारे में पढ़ता या स्वयं ऐसे समाधानों के बारे में सोचता, तो हमेशा एक ही नतीजा उसके सामने आता। आत्मा, संकल्प, मुक्ति और तत्त्व जैसे अस्पष्ट शब्दों की उपलब्ध व्याख्याओं को मानते और जान-बूझकर शब्दों के उस जाल में फंसते हुए, जो दर्शनशास्त्र या वह स्वयं अपने लिये बिछाता था, वह मानो कुछ समझने लगता था। किन्तु विचारों की कृत्रिम धारा को भूलते और वास्तविक जीवन से उधर मुड़ते ही, जो निश्चित चिन्तन-धारा का अनुकरण करते हुए उसे सन्तोषजनक लगता था, उसकी यह कृत्रिम इमारत ताश के पत्तों के घर की तरह भहरा कर नीचे गिर पड़ती और यह स्पष्ट हो जाता कि उस इमारत को जीवन में तर्क-शक्ति से कुछ अधिक महत्त्व रखनेवाली चीज़ की अवहेलना करके शब्दों के हेर-फेर से ही खड़ा किया गया था।

एक बार शोपेनहार को पढ़ते समय उसने संकल्प की जगह प्यार शब्द रख दिया और जब तक कि उसने इसका दामन नहीं छोड़ा, यह नया दर्शन दो दिन तक उसे सान्त्वना देता रहा। किन्तु जब उसने इसे वास्तविक जीवन की दृष्टि से देखा, तो यह भी धराशायी हो गया और ठण्ड से बचा सकने में असमर्थ मलमल की पोशाक जैसा प्रतीत हुआ।

लेविन के भाई कोज़्निशेव ने उसे धर्मशास्त्र के बारे में ख़ोम्याकोव की रचना पढ़ने का सुझाव दिया। लेविन ने ख़ोम्याकोव का दूसरा खण्ड पढ़ा और उसकी विवादपूर्ण, बढ़िया तथा चुटकियां लेनेवाली शैली के बावजूद, जो शुरू में उसे अच्छी नहीं लगी, चर्च के बारे में उसकी शिक्षा से आश्चर्यचकित रह गया। आरम्भ में उसे इस विचार ने हैरान किया कि किसी एक व्यक्ति के लिये ईश्वरीय सत्यों को समझ पाना सम्भव नहीं, मगर चर्च द्वारा सूत्रबद्ध सभी लोग इसे मिलकर

समझ सकते हैं। उसे इस विचार से ख़ास ख़ुशी हुई थी कि लोगों की सभी आस्थाओं को समेट लेनेवाले विद्यमान और अब सजीव चर्च पर, जिसका शीर्ष भगवान होने के कारण पावन और पापमुक्त था, विश्वास करना अधिक आसान था। दूरस्थ, रहस्यपूर्ण भगवान और विश्व-रचना, आदि से शुरू करने के बजाय इसे ही प्रस्थान-बिन्दु बनाकर भगवान, उत्पत्ति, पतन और प्रायश्चित में विश्वास किया जा सकता था। किन्तु बाद में एक कैथोलिक लेखक तथा एक रूसी आर्थोडाक्स लेखक का चर्च-सम्बन्धी इतिहास पढ़ने के बाद और यह देखकर कि दोनों चर्च अपने सार में अमोघ होते हुए भी एक-दूसरे का खण्डन करते हैं, वह चर्च के बारे में ख़ोम्याकोव की शिक्षा से भी निराश हो गया और दर्शनशास्त्र की इमारत की तरह यह भी भहरा कर नीचे गिर गयी।

इस पूरे वसन्त में वह अपने से पराया-सा रहा और उसने बहुत ही भयानक क्षणों की यातना सही।

"यह जाने बिना कि मैं क्या हूं और किसलिये यहां हूं, जीना सम्भव नहीं। मगर मैं यह जान नहीं सकता और इसलिये नतीजा यही निकलता है कि मुझे जीना नहीं चाहिये," लेविन अपने आपसे कहता।

"अनन्त काल, अनन्त भूतद्रव्य और अनन्त विस्तार में जीव रूपी एक बुलबुला सामने आता है और कुछ समय तक क़ायम रहकर फट जाता है और यह बुलबुला हूं मैं।"

यह यातनापूर्ण झूठ था, किन्तु यही इस दिशा में मानव के शताब्दियों के चिन्तन का एकमात्र और अन्तिम परिणाम था।

यही वह अन्तिम विश्वास था, जिस पर लगभग सभी क्षेत्रों में मानवीय चिन्तन की सारी खोजें आधारित थीं। यही प्रमुखतम धारणा थी और अन्य सभी धारणाओं की तुलना में अधिक स्पष्ट होने के कारण लेविन ने यह न जानते हुए कि कब और कैसे अनजाने ही इसी धारणा को ग्रहण कर लिया था।

किन्तु यह झूठ ही नहीं, बल्कि बुराई की तथा किसी ऐसी घृणित शक्ति का ऐसा क्रूर व्यंग्य था, जिसके सामने झुकना उचित नहीं था।

इस शक्ति के चंगुल से निजात पाना ज़रूरी था। और निजात

पाना हर आदमी के अपने हाथों में था। बुराई पर अपनी निर्भरता को समाप्त करने की ज़रूरत थी। और इसका एक ही उपाय था – मौत।

सुखी परिवार वाला स्वस्थ लेविन कई बार आत्महत्या करने के इतना निकट तक जा पहुंचा कि उसने अपने को सूली न लगा लेने के डर से रस्सी छिपा दी और इस डर से कि कहीं अपने को गोली न मार ले वह बन्दूक़ हाथ में नहीं लेता था।

किन्तु लेविन ने न तो अपने को गोली मारी और न वह फांसी का फंदा बनाकर झूला बल्कि जीता रहा।

(१०)

लेविन जब यह सोचता था कि वह क्या है और किसलिये ज़िन्दा है, तो उसे कोई जवाब नहीं मिलता था और वह हताश हो उठता था। किन्तु जब वह अपने से यह सवाल न करता, तो उसे मानो यह पता होता था कि वह क्या है और किसलिये जी रहा है, क्योंकि दृढ़ता और निश्चित ध्येय से काम करता तथा जीता था। यहां तक कि इस पिछले समय में भी वह पहले की तुलना में कहीं अधिक दृढ़ता और लक्ष्य की स्पष्टता से जी रहा था।

जून के आरम्भ में गांव लौटने पर वह अपने सामान्य काम-काज में जुट गया था। खेतीबारी, किसानों और पड़ोसियों के साथ सम्बन्ध, घर-गृहस्थी की चिन्ता, बहन और भाई के कारोबारी मामले, जिनकी वही देखभाल करता था, पत्नी और सगे-सम्बन्धियों के साथ उसके सम्बन्ध, बच्चे की फ़िक्र और इस वसन्त से पैदा होनेवाला मधुमक्खियों के पालन का नया शौक़ – ये सब उसका सारा समय ले जाते थे।

वह इन कामों में इसलिये नहीं लगा रहता था कि इन्हें किन्हीं सर्वमान्य सिद्धान्तों की दृष्टि से उचित समझता था, जैसा कि पहले करता था। इसके विपरीत, अब एक ओर तो, सभी की भलाई के लिये पहले किये गये कार्यों की असफलता से निराश होने तथा दूसरी ओर, अपने विचारों और सभी ओर से घेर लेनेवाले कार्यों में व्यस्तता के कारण उसने सभी की भलाई के विचार को बिल्कुल भुला दिया था

और अपने इन कामों में केवल इसलिये जुटा रहता था कि उसे ऐसा प्रतीत होता कि वह जो कुछ कर रहा है, उसे करना चाहिये, और इससे भिन्न कुछ नहीं कर सकता था।

पहले (और इसका अर्थ था लगभग बचपन से आरम्भ करके उसके पूरी तरह जवान होने तक) जब कभी वह कुछ ऐसा करने का प्रयास करता था, जिससे सभी का, मानवजाति, रूस या गांव का भला होता, तो अनुभव करता कि ऐसे विचार उसके मन को अच्छे लगते हैं, मगर उसकी गतिविधि हमेशा सन्तोषजनक नहीं होती थी। उसे इस बात का पूरा भरोसा नहीं होता था कि उस काम की वास्तव में ही बड़ी ज़रूरत है और आरम्भ में अत्यधिक प्रतीत होनेवाली उसकी क्रियाशीलता कम होती-होती पूरी तरह समाप्त हो जाती थी। शादी के बाद अब, जब वह जीवन को अधिकाधिक अपने ही लिये सीमित करने लगा था, उसे अपनी क्रियाशीलता के विचार से बेशक किसी ख़ुशी की अनुभूति नहीं होती थी, वह यह विश्वास अनुभव करता था कि जो कुछ कर रहा है, उसे करने की ज़रूरत है, देखता कि पहले की तुलना में वह अधिक तेज़ी से होता है और अधिकाधिक बढ़ता ही जाता है।

अब वह जैसे अपनी इच्छा के विरुद्ध हल के फाल की तरह ज़मीन में अधिकाधिक गहरा धंसता जाता था और हल-रेखा बनाये बिना बाहर नहीं निकल सकता था।

बाप-दादा जिस तरह से रहने के आदी हो गये थे, परिवार में उसी तरह से जीना, शिक्षा के उसी स्तर और वैसी ही परिस्थितियों में बच्चों का पालन-पोषण निस्सन्देह आवश्यक था। यह वैसे ही ज़रूरी था, जैसे भूख लगने पर भोजन करना ज़रूरी होता है। और इसके लिये जैसे खाना पकाना ज़रूरी है, वैसे ही पोक्रोव्स्कोये के कृषि-कार्य का ऐसे संचालन आवश्यक था कि आमदनी हो। जैसे ऋण चुकाना चाहिये, वैसे ही पैतृक धरोहर को ऐसी स्थिति में रखना ज़रूरी था कि उसे उत्तराधिकार में पाकर बेटा वैसे ही धन्यवाद दे, जैसे लेविन अपने दादा को उसके लिये धन्यवाद देता था, जो उन्होंने बनाया और रोपा था। और इसके लिये ज़रूरी था कि भूमि को किराये पर न देकर ख़ुद उस पर खेती करवाये, पशु रखे, खेतों में खाद डाले और जंगल उगाये।

कोज़्निशेव और बहन के मामलों की चिन्ता न करना और उन किसानों की सहायता न करना, जो सलाह-मशविरा लेने के लिये उसके पास आने के आदी हो गये थे, वैसे ही असम्भव था, जैसे गोद में उठाये हुए बच्चे को नीचे गिराना असम्भव होता है। अपनी बड़ी साली और उसके बच्चों की चिन्ता करना भी ज़रूरी था, जिन्हें उसने अपने यहां बुला रखा था, अपनी पत्नी और बच्चे का ध्यान करना तथा उनके साथ दिन में, बेशक थोड़ा-सा ही सही, समय बिताना लाज़िमी था।

यह सब और शिकार तथा मधुमक्खियों के पालन का नया शौक़ लेविन के उस जीवन को बहुत व्यस्त रखता था, जो चिन्तन करने पर उसे सारहीन प्रतीत होता था।

किन्तु लेविन न केवल यही अच्छी तरह से जानता था कि उसे क्या करना चाहिये, बल्कि सही तौर पर यह भी जानता था कि यह सब कैसे करना चाहिये और कौन-सा काम अधिक महत्त्वपूर्ण है।

उसे मालूम था कि मज़दूरों को कम से कम मजूरी देकर काम लेना चाहिये, मगर पेशगी देकर उन्हें बांध लेना और इस तरह जितनी उचित है, उससे भी कम मजूरी देना ठीक नहीं, यद्यपि ऐसा करना बहुत लाभदायक होता। चारे की कमी के समय किसानों को पुआल भी बेचा जा सकता था, यद्यपि इसके लिये उनसे पैसे लेते हुए अफ़सोस होता था, मगर सराय और शराबख़ाने को नष्ट कर देना चाहिये, गो उनसे आमदनी होती थी। जंगलों को काटने के लिये किसानों को कड़े से कड़ा दण्ड देना चाहिये, किन्तु खेतों में चरने के लिये हांक दिये गये उनके पशुओं के लिये उनसे जुर्माना नहीं लेना चाहिये, यद्यपि रखवालों को यह बुरा लगता था और फिर किसानों का भय भी जाता रहता था। इसके अलावा ऐसे पशुओं को लौटाना भी ज़रूरी था।

हर महीने दस प्रतिशत का ब्याज देनेवाले प्योत्र को सूदख़ोर के पंजे से निजात दिलाने के लिये ऋण देना ज़रूरी था, किन्तु लगान अदा न करनेवाले किसानों का लगान न तो कम और न ही स्थगित करना चाहिये। कारिन्दे को यह क्षमा नहीं किया जा सकता था कि चरागाह में घास न काटी जाये और वह नष्ट हो जाये, किन्तु जिस दो सौ एकड़ भूमि में नये जंगल उगाये गये थे, वहां घास बिल्कुल ही

नहीं काटी जानी चाहिये। काम के बहुत व्यस्त समय में इसलिये घर चले जानेवाले मज़दूर को क्षमा नहीं किया जा सकता था कि उसका बाप मर गया है, चाहे उसके लिये कितना ही दुख क्यों न हो, और ऐसे क़ीमती वक़्त में ग़ैरहाज़िर रहने के कारण उसे कम मज़दूरी देनी चाहिये, मगर बूढ़े हो चुके तथा किसी काम के न रहनेवाले घरेलू नौकरों-चाकरों को मासिक वेतन देना चाहिये।

लेविन यह भी जानता था कि घर लौटने पर उसे पहले अपनी पत्नी के पास जाना चाहिये, जो स्वस्थ नहीं थी, और तीन घण्टों से राह देख रहे किसान और भी इन्तज़ार कर सकते थे। उसे यह भी मालूम था कि मधुमक्खियों के छत्ते बढ़ाने से उसे बहुत ख़ुशी होती थी, फिर भी उसे इस ख़ुशी से वंचित रहते हुए बूढ़े मधुमक्खियों के पालक को ही यह काम करने देना चाहिये और ख़ुद उन किसानों से बातचीत करनी चाहिये, जो मधुमक्खी पालनशाला में उससे मिलने आ गये थे।

वह अच्छा या बुरा करता था, उसे यह मालूम नहीं था और इसके बारे में अब न केवल अपना मत ही सिद्ध नहीं करना चाहता था, बल्कि इस सम्बन्ध में बातचीत और सोचने-विचारने से भी कन्नी काटता था।

सोच-विचार करने से उसके मन में सन्देह पैदा होते थे और उसके यह देख पाने में बाधा डालते थे कि वह क्या करे और क्या न करे। जब वह सोचता नहीं था और जीता जाता था, तो लगातार अपनी आत्मा में कभी ग़लती न करनेवाले ऐसे निर्णायक की उपस्थिति अनुभव करता रहता था, जो यह तय करने में समर्थ था कि दो सम्भव कार्रवाइयों में से कौन-सी अच्छी और कौन-सी बुरी है। जैसे ही वह कुछ ऐसे करता, जो उसे नहीं करना चाहिये था, वह तत्काल ही इसे अनुभव कर लेता।

इस तरह वह यह जाने बिना और इस बात को जानने का अवसर पाये बिना ही कि वह कौन है और इस दुनिया में क्यों जी रहा है, जीता रहा। उसके लिये इस ज्ञान के अभाव की यातना इतनी अधिक थी कि उसे भय होता कि कहीं वह आत्महत्या न कर ले। साथ ही वह अपना व्यक्तिगत जीवन-पथ भी बनाता रहा।

कोज़्निशेव के पोक्रोव्स्कोये गांव में आने के दिन लेविन बहुत ही यातनापूर्ण मानसिक स्थिति में था।

अत्यधिक व्यस्तता का ऐसा समय था, जब किसान लोग श्रम के मामले में ऐसा असाधारण तनावपूर्ण आत्मबलिदानी उत्साह दिखाते हैं, जैसा कि जीवन की किन्हीं भी अन्य परिस्थितियों में नहीं दिखाया जाता और जिसका बहुत ऊंचा मूल्यांकन होता, यदि ऐसे गुण प्रकट करनेवाले लोग स्वयं उनका मूल्यांकन करते, यदि यह हर वर्ष न दोहराया जाता और यदि इस तनाव के परिणाम इतने साधारण न होते।

रई और जई को काटना, इनके पूले बांधना और छकड़ों में लादकर ले जाना, चरागाहों में घास की कटाई ख़त्म करना, ज़मीन को फिर से जोतना, बीजों को मांड़ना और जाड़े की फ़सल के लिये बुआई करना – यह सब कुछ सीधा-सादा और साधारण काम लगता है। किन्तु यह सब कर पाने के लिये ज़रूरी है कि गांव के सभी छोटे-बड़े लोग इन तीन-चार सप्ताहों के दौरान सामान्य की तुलना में तिगुना काम करें, काली रोटी और प्याज़ खाकर तथा क्वास पीकर गुज़ारा करें, रातों को पूलों को मांड़ें और छकड़ों पर लादकर ले जायें और चौबीस घण्टों में दो-तीन घण्टों से अधिक न सोयें। और सारे रूस में हर साल यही होता है।

जीवन का अधिकतर भाग गांव में बिताने और किसानों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण लेविन को काम के इस अत्यधिक व्यस्त समय में हमेशा ऐसा अनुभव होता कि किसानों के आम जोश से वह ख़ुद भी वंचित नहीं रहता है।

लेविन सुबह ही वहां गया, जहां रई की पहली बुवाई हो रही थी, और जई के पूले बांधकर उन्हें घोड़ा-गाड़ियों पर लादा जा रहा था। पत्नी और बड़ी साली के जागने के समय घर लौटकर उसने उनके साथ कॉफ़ी पी और पैदल फ़ार्म को चला गया, जहां बीज तैयार करने के लिये मांड़ने की नई मशीन लगायी गयी थी।

कारिन्दे, किसानों और घर पर पत्नी, डौली, उसके बच्चों और अपने ससुर से बातचीत करते हुए लेविन कृषि-सम्बन्धी अपनी

चिन्ताओं के अलावा दिन भर एक ही बात के बारे में, जो इस समय उसके मन पर छाई हुई थी, सोचता रहा और हर चीज़ में अपने इन प्रश्नों के – "मैं क्या हूं? कहां हूं? किसलिये यहां हूं?" उत्तर ढूंढ़ता रहा।

कुछ ही समय पहले पुनः फूंस से ढके गये खलिहान की ठण्डक में खड़े होकर और ऐस्प की ताज़ा-ताज़ा छीली गयी कड़ियों और हेज़ल की जाली, जिस पर अभी तक पत्ते लगे हुए थे, की सुगन्ध में सांस लेते हुए लेविन कभी खुले फाटक में से, जहां अनाज के मांड़े जाने से खुश्क और कड़वी धूल उड़ और चक्कर काट रही थी, कभी तेज़ धूप में चमकती घास और खत्ती से इसी वक़्त लाये गये ताज़ा भूसे को, कभी सफ़ेद वक्ष और रंग-बिरंगे सिर वाली अबाबीलों की ओर देखता, जो शूं की आवाज़ करती हुई छत के नीचे उड़तीं और फाटक के प्रकाश में रुककर पंखों को फड़फड़ातीं, तो कभी खलिहान के अंधेरे और धूल में हिलते-डुलते लोगों की ओर देखता और ऐसा करते समय उसके मस्तिष्क में अजीब-अजीब विचार आते।

"यह सब किसलिये किया जा रहा है?" वह सोच रहा था। "किसलिये मैं यहां खड़ा हुआ इन्हें काम करने को बाध्य कर रहा हूं? किसलिये ये सभी इतनी दौड़-धूप कर रहे हैं और मेरी उपस्थिति में अपनी इतनी अधिक लगन दिखाने का प्रयत्न कर रहे हैं? मेरी यह सुपरिचिता मात्र्योना क्यों इतना अधिक काम कर रही है? (आग लगने के समय जब इस पर शहतीर गिर गया था, तो मैंने इसकी चिकित्सा की थी)" – वह दुबली-पतली उस किसान औरत की ओर देखते हुए सोच रहा था, जो जेली से अनाज को समेटते हुए खलिहान के सख़्त और टेढ़े-मेढ़े फ़र्श पर बड़ी कठिनाई से चल रही थी। "तब तो यह स्वस्थ हो गयी थी, लेकिन कल-परसों नहीं, तो दस साल बाद इसे दफ़ना दिया जायेगा और न तो इसका और न ही गाढ़े का लाल स्कर्ट पहने उस छैल-छबीली का ही कुछ बाक़ी बचेगा, जो ऐसी फुर्ती और हल्की-फुल्की गतिविधि से बालियों से भूसा अलग कर रही है। इसे भी मिट्टी दे दी जायेगी और इस चितकबरी घोड़ी को तो बहुत ही जल्द दफ़ना दिया जायेगा," उसने बार-बार नथुने फुलाकर सांस लेती घोड़ी की ओर देखते हुए सोचा, जिसका पेट हांफने के कारण

उस समय ऊपर-नीचे उठता-गिरता था, जब वह तनिक झुके हुए पहिये के गिर्द घुमती थी। "इसे दफ़ना दिया जायेगा और मशीन में पूले डालने वाले फ़्योदोर को भी दफ़ना दिया जायेगा, जिसकी घुंघराली दाढ़ी भूसे से अटी है और गोरे कंधे पर क़मीज़ फटी हुई है। किन्तु वह पूलों को खोलता जा रहा है, कुछ आदेश दे रहा है, औरतों पर चीख़-चिल्ला रहा है और बड़ी फुर्ती से पहिये का पट्टा ठीक करता जाता है। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि इन्हें ही नहीं, मुझे भी दफ़ना दिया जायेगा और कुछ भी बाक़ी नहीं बचेगा। आख़िर यह सब क्यों है?"

वह यह सोच रहा था और साथ ही घड़ी पर भी नज़र डालता जाता था, ताकि यह हिसाब लगा सके कि एक घण्टे में कितना अनाज मांड़ा गया है। उसके लिये यह जानना ज़रूरी था, क्योंकि इसी के मुताबिक़ उसे दिन भर के काम की मात्रा निर्धारित करनी थी।

"जल्द ही एक घण्टा होनेवाला है और इन्होंने केवल तीसरा पूला शुरू किया है," लेविन ने सोचा। वह मशीन में पूले डालनेवाले फ़्योदोर के पास पहुंचा और मशीन के शोर से अधिक ऊंची आवाज़ में बोलते हुए उससे कहा कि वह कम मात्रा में पूले मशीन में डाले।

"बहुत अधिक पूले डालते हो, फ़्योदोर! देखते हो न कि इसी वजह से मशीन रुक जाती है और जल्दी-जल्दी काम नहीं होता। थोड़े-थोड़े पूले डालो!"

पसीने से तर चेहरे पर चिपकी धूल के कारण काले हुए फ़्योदोर ने चिल्लाकर जवाब में कुछ कहा, मगर फिर भी वैसे काम नहीं किया, जैसे लेविन चाहता था।

लेविन ने मशीन के पास जाकर फ़्योदोर को एक तरफ़ हटा दिया और ख़ुद मशीन में पूले डालने लगा।

थोड़ी देर बाद आरम्भ होनेवाले किसानों के दोपहर के खाने के वक़्त तक काम करने के बाद फ़्योदोर के साथ लेविन खलिहान से बाहर आया और मांड़ने के लिये तैयार रई के साफ़, पीले पूले के क़रीब खड़ा होकर उससे बात करने लगा।

फ़्योदोर दूर के उस गांव का रहनेवाला था, जहां लेविन पहले सहकारिता के आधार पर जुताई के लिये ज़मीन दिया करता था।

अब वह अहाते को झाड़ने-बुहारने वाले को लगान पर दे दी गयी थी।

लेविन ने फ़्योदोर के साथ इसी ज़मीन के बारे में बात की और पूछा कि क्या उसी गांव में रहनेवाला भला और धनी किसान, प्लातोन, उसे अगले वर्ष के लिये लगान पर नहीं ले लेगा।

"लगान बहुत अधिक है। प्लातोन के बस की बात नहीं है, कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच," किसान ने पसीने से भीगी अपनी क़मीज़ में से बालियां निकालते हुए उत्तर दिया।

"किरील्लोव कैसे इतना लगान दे पाता है?"

"मित्यूख़ा" (किसान ने अहाते की सफ़ाई करने वाले को तिरस्कारपूर्वक यही संज्ञा दी) "तो बालू में से तेल निकाल लेनेवाला आदमी है, कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच। वह दूसरे को निचोड़ कर अपना नफ़ा हासिल कर लेगा। वह इन्सान पर कभी दया नहीं करेगा। मगर चाचा फ़ोकानिच" (बूढ़े प्लातोन के लिये उसने इसी सम्बोधन का उपयोग किया) "क्या कभी किसी के कपड़े उतारेगा? किसी को क़र्ज़ दे देता है, तो कभी-कभी वापस ही नहीं लेता। कभी-कभी ख़ुद उसे भी पैसों की कमी हो जाती है। ऐसा आदमी है वह।"

"पर वह क़र्ज़ वापस क्यों नहीं लेता?"

"बस, ऐसे ही – तरह-तरह के लोग जो ठहरे। कुछ अपने पेट की आग बुझाने के लिये ही जीते हैं, मित्यूख़ा जैसे, अपना पेट ही भरते जाते हैं, मगर फ़ोकानिच – वह सच्चा बूढ़ा आदमी है। वह अपनी आत्मा के लिये जीता है। भगवान को याद रखता है।"

"भगवान को याद रखता है? आत्मा के लिये जीता है? क्या मतलब है तुम्हारा?" लेविन लगभग चीख़ उठा।

"वह तो साफ़ है, सचाई से, भगवान के बताये ढंग से। लोग तो अलग-अलग होते हैं। आप ही को लिया जा सकता है, आप भी तो किसी का दिल नहीं दुखायेंगे..."

"हां, हां, अच्छा, मैं चल दिया!" लेविन ने उत्तेजना से बेदम होते हुए कहा, मुड़ा और अपनी छड़ी लेकर तेज़ी से घर की ओर चल दिया। किसान के इस आशय के शब्दों से कि फ़ोकानिच अपनी आत्मा के लिये जीता है, सचाई और भगवान के बताये हुए ढंग से जीता है, अस्पष्ट किन्तु महत्त्वपूर्ण विचारों की भीड़ मानो ताले में

बन्द किसी जगह से बाहर उमड़ पड़ी और सभी विचार एक ध्येय की ओर बढ़ते हुए तथा अपने प्रकाश से चकाचौंध करते हुए उसके दिमाग़ में चक्कर काटने लगे।

(१२)

लेविन बड़े रास्ते पर लम्बे-लम्बे डग भरता चला जा रहा था, अपने विचारों पर तो इतना ध्यान नहीं दे रहा था (वह उन्हें अच्छी तरह से समझ पाने में अभी असमर्थ था), जितना कि उस मानसिक स्थिति की ओर, जो उसने पहले कभी अनुभव नहीं की थी।

किसान द्वारा कहे गये शब्दों ने उसकी आत्मा में बिजली की एक ऐसी चिंगारी का काम किया, जिसने उसके बिखरे-बिखराये, अलग-थलग तथा प्रभावहीन विचारों को, जो हमेशा उसके दिमाग़ में घूमते रहते थे, अचानक रूपान्तरित करके सूत्रबद्ध कर दिया था। उसके अनजाने में ये विचार उस समय भी उसके मन में चक्कर काट रहे थे, जब वह ज़मीन को लगान पर देने की बात कर रहा था।

वह अपनी आत्मा में कुछ नया-सा अनुभव कर रहा था और यह न जानते हुए कि यह नयी चीज़ क्या है, बहुत आनन्दित होकर इसका स्पर्श-सुख पा रहा था।

"अपने पेट, अपनी ज़रूरतों के लिये नहीं, भगवान के लिये जिया जाये। किस भगवान के लिये? उस किसान ने जो कुछ कहा, उससे अधिक बेतुका और क्या कहा जा सकता है? उसने कहा कि हमें अपनी आवश्यकताओं के लिये नहीं जीना चाहिये, अर्थात उसके लिये नहीं जीना चाहिये, जिसे हम समझते हैं, जिसकी ओर हम खिंचते हैं, जो हम चाहते हैं, बल्कि उसके लिये जियें, जो हमारी समझ के बाहर है, भगवान के लिये जियें, जिसे न कोई समझ सकता है और न ही जिसकी कोई स्पष्ट व्याख्या कर सकता है। तो नतीजा क्या निकला? फ़्योदोर के उन अर्थहीन शब्दों को मैं नहीं समझा? और समझने पर उनकी न्यायसंगतता पर अविश्वास किया? उन्हें मूर्खतापूर्ण, अस्पष्ट और अप्रामाणिक पाया?

"नहीं, मैंने उसको समझ लिया और बिल्कुल वैसे ही, जैसे

वह समझता है, पूरी तरह और उससे भी अधिक अच्छी तरह समझ गया, जितना जीवन में किसी भी चीज़ को समझता हूं, इसके बारे में मुझे जीवन में कभी सन्देह नहीं हुआ और सन्देह नहीं हो सकता। मैं अकेला ही नहीं, बल्कि सभी, सारी दुनिया इस बात को अच्छी तरह समझती है, इसके बारे में सन्देह नहीं करती और हमेशा सहमत रही है।

"फ़्योदोर का कहना है कि अहाते को झाड़ने-बुहारने वाला किरील्लोव अपने पेट के लिये जीता है। यह चीज़ समझ में आती है और समझदारी की बात भी है। सूझ-बूझ वाले प्राणियों के नाते हम पेट के अलावा और किसी तरह जी भी नहीं सकते। और अचानक वही फ़्योदोर यह भी कहता है कि पेट के लिये जीना बुरा है, कि हमें सचाई के लिये, भगवान के लिये जीना चाहिये और मैं संकेत से ही उसकी यह बात समझ जाता हूं! मैं तथा शताब्दियों पहले और अब इस धरती पर जीनेवाले करोड़ों लोगों, किसानों, आत्मा से दरिद्र और अत्यधिक बुद्धिमान लोगों ने, जिन्होंने इस बारे में सोचा और लिखा है, अपनी अस्पष्ट भाषा में वही कुछ कहा है, हम सब एक बात पर सहमत हैं – किस चीज़ के लिये जीना चाहिये और क्या अच्छा है। सभी लोगों के साथ मेरा भी एक दृढ़, निर्विवाद और स्पष्ट ज्ञान है और इस ज्ञान की बुद्धि से व्याख्या नहीं की जा सकती – वह इसकी परिधि से बाहर है, उसके न तो कोई कारण हैं और न कोई परिणाम ही हो सकते हैं।

"भलाई का यदि कोई कारण है, तो वह भलाई नहीं रही। अगर उसका कोई परिणाम अर्थात पुरस्कार है, तो वह भी भलाई नहीं। नतीजा यह निकला कि भलाई कारण और परिणाम की शृंखला से बाहर है।

"इसे तो मैं जानता हूं और हम सभी जानते हैं।

"और मैं चमत्कारों की खोज कर रहा था, इस बात के लिये अफ़सोस करता था कि ऐसा चमत्कार नहीं देखा, जो मुझे इसका विश्वास दिला सकता। और चमत्कार तो यह रहा – एकमात्र सम्भव, स्थायी रूप से विद्यमान, सभी ओर से मुझे घेरे हुए, और मैंने इसकी ओर ध्यान नहीं दिया।

"इससे बढ़कर और क्या चमत्कार हो सकता है?

"क्या मुझे सारी बात का समाधान मिल गया, क्या मेरी यातनाओं का अन्त हो गया?" धूल भरे रास्ते पर डग भरता, गर्मी और थकान को न अनुभव करता तथा दीर्घकालीन यातना से मुक्ति की अनुभूति मन में लिये वह सोच रहा था। यह अनुभूति इतनी अधिक सुखद थी कि अविश्वसनीय-सी प्रतीत हुई। उत्तेजना से उसके लिये सांस लेना कठिन हो रहा था और आगे जाने में अपने को असमर्थ-सा अनुभव करते हुए वह रास्ता छोड़कर जंगल में चला गया और ऐस्प वृक्षों की छाया में अनकटी घास पर बैठ गया। पसीने से तर सिर पर से उसने टोप उतार लिया और कोहनी की टेक लगकर जंगल की रसीली, चौड़ी पत्तियोंवाली घास पर लेट गया।

"हां, मुझे अपने को सम्भालना और सभी बातों पर चिन्तन करना चाहिये," अपने सामने उस घास को एकटक देखते हुए, जो रौंदी नहीं गयी थी, और उस हरे कीड़े की गतिविधि की ओर ध्यान देते हुए, जो घास के डंठल पर चढ़ रहा था और एक दूसरे पौधे का पत्ता जिसके मार्ग में बाधा बन रहा था, वह सोच रहा था। "सब कुछ आरम्भ से सोचना चाहिये," उसने पौधे को दूसरी ओर करते हुए ताकि वह कीड़े के मार्ग में बाधा न बने और घास के एक अन्य तिनके को झुकाते हुए, ताकि कीड़ा उस पर चला जाये, अपने आपसे कहा। "किस बात की ख़ुशी हो रही है मुझे? क्या खोज लिया है मैंने?

"पहले मैं यह कहता था कि मेरे शरीर में, इस घास और इस कीड़े के शरीर में (उसने घास की दूसरी पत्ती पर नहीं जाना चाहा और पंख फैलाकर उड़ गया) शारीरिक, रासायनिक और भौतिक नियमों के अनुसार द्रव्य-पदार्थ का रूप-परिवर्त्तन होता है। ऐस्पों, बादलों और नीहारिकाओं समेत हम सभी का विकास हो रहा है। किस चीज़ से, किस चीज़ में? अन्तहीन विकास और संघर्ष?.. मानो अनन्त में कोई दिशा और संघर्ष हो सकता है! और मुझे आश्चर्य हो रहा था कि इस मार्ग पर विचारों के अत्यधिक तनाव के बावजूद मैं अपने जीवन का अर्थ, अपनी मानसिक उत्तेजनाओं और प्रयासों का अर्थ नहीं समझ पा रहा था। किन्तु मेरी अन्तःप्रेरणाओं का अर्थ

इतना स्पष्ट है कि मैं निरन्तर उसी के अनुसार जी रहा हूं, और जब किसान ने उसके बारे में मुझसे कहा, तो मैं हैरान और ख़ुश भी हुआ – भगवान के लिये जियो, आत्मा के लिये जियो।.

"मैंने कोई खोज नहीं की। मैंने केवल वही जाना है, जो मैं जानता हूं। मैं उस शक्ति को समझ गया, जिसने न केवल अतीत में मुझे जीवन दिया, बल्कि अब भी मुझे जीवन देती है। मुझे छल से मुक्ति मिल गयी, मैं स्वामी को जान गया।"

और उसने इन पिछले दो वर्षों में अपनी पूरी विचार-शृंखला को संक्षिप्त रूप से मन ही मन दोहराया, जिसका निश्चय ही मृत्यु-ग्रास बन जानेवाले प्यारे भाई को देखने पर मृत्यु के बारे में स्पष्ट और प्रत्यक्ष विचार से आरम्भ हुआ था।

तब पहली बार स्पष्ट रूप से यह समझकर कि हर व्यक्ति और ख़ुद उसके आगे भी यातना, मृत्यु और स्थायी रूप से विस्मृत हो जाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, उसने यह तय किया था कि ऐसे जीने में कोई तुक नहीं, कि उसे अपने जीवन को या तो ऐसे स्पष्ट करना होगा कि वह किसी शैतान का द्वेषपूर्ण मज़ाक़ न लगे या फिर अपने को गोली मार लेगा।

किन्तु उसने दोनों में से एक भी बात नहीं की, जीता, सोचता और अनुभव करता रहा, यहां तक कि इस समय के दौरान उसने शादी भी की, बहुत-सी ख़ुशियों का आनन्द पाया और जब अपने जीवन के अर्थ के बारे में नहीं सोचता था, तो सुखी भी रहा।

तो इससे क्या नतीजा निकलता है? इससे यह नतीजा निकलता है कि वह अच्छी तरह से जीता, मगर बुरे ढंग से सोचता रहा।

वह जीता रहा (इसे न जानते हुए) उन्हीं मानसिक सत्यों के सहारे, जो उसे मां के दूध के साथ मिले, किन्तु सोचता रहा न केवल इन सत्यों को स्वीकार किये बिना, बल्कि बड़े यत्नपूर्वक इनसे कन्नी काटता हुआ।

अब उसे स्पष्ट था कि वह उन्हीं आस्थाओं की बदौलत ज़िन्दा रह पाया, जिनमें उसका पालन-पोषण हुआ था।

"अगर मुझमें ये आस्थायें न होतीं, अगर मैं यह न जानता होता कि अपनी ज़रूरतों के लिये नहीं, भगवान के लिये जीना चाहिये, तो

मैं कैसा होता और कैसे मैंने अपना जीवन बिताया होता? मैंने दूसरों को लूटा होता, झूठ बोला होता, हत्यायें की होतीं। जो भी मेरे जीवन की प्रमुख ख़ुशियां हैं, उनमें से कोई भी मेरे लिये न होती।" और अपनी कल्पना पर बहुत ज़ोर डालने के बावजूद वह यह अनुमान न लगा पाया कि अगर उसे यह ज्ञान न होता कि किसलिये जीवित है, तो वह कैसा दरिन्दा होता।

"मैं अपने प्रश्न का उत्तर खोज रहा था। मगर विचार या तर्क मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता था – वह प्रश्न के अनुपात में नहीं है। स्वयं जीवन ने, मेरे इस ज्ञान ने कि क्या अच्छा और क्या बुरा है, इसका उत्तर दिया है। और यह ज्ञान मैंने कहीं से प्राप्त नहीं किया, अन्य सभी के साथ मुझे मिला है, इसलिए मिला है कि मैं इसे कहीं से प्राप्त नहीं कर सकता था।

"कहां से मैंने यह प्राप्त किया? क्या तर्क और सूझ-बूझ से मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि इन्सान को प्यार करना चाहिये, उसका गला नहीं घोंटना चाहिये? मुझसे बचपन में ऐसा कहा गया और मैंने सहर्ष इस पर विश्वास कर लिया, क्योंकि मुझसे वह कहा गया, जो मेरी आत्मा में था। और किसने इसे खोजा? तर्क ने नहीं। तर्क ने अस्तित्व के संघर्ष और इस बात की मांग करनेवाले नियम की खोज की कि मैं अपनी इच्छाओं की पूर्त्ति में बाधा बननेवाले सभी लोगों का गला घोंट दूं। हमारी समझ-बूझ का यही परिणाम है। किन्तु दूसरे को प्यार करने की खोज समझ-बूझ नहीं कर सकती थी, क्योंकि ऐसा करना समझदारी नहीं है।"

"हां, घमंड," उसने पेट के बल लेटते, घास के तनों को टूटने से बचाते और उन्हें गांठें देते हुए कहा।

"और बुद्धि का घमंड ही नहीं, उसकी मूर्खता भी। और सबसे बढ़कर तो बेईमानी, बुद्धि की बेईमानी। हां, बुद्धि का कपट," उसने दोहराया।

(१३)

और लेविन को डौली और उसके बच्चों के साथ कुछ ही समय पहले हुई एक घटना की याद हो आई। बच्चों ने अकेले रह जाने पर रस्पबे-

रियों को मोमबत्तियों पर भूनना और एक-दूसरे के मुंह में फ़व्वारे की तरह दूध डालना शुरू कर दिया। उनकी मां ने उन्हें ऐसे करते पकड़ लिया और लेविन की उपस्थिति में उन्हें यह समझाने लगी कि जो कुछ वे नष्ट कर रहे हैं, उसे बनाने के लिये बड़ों का कितना अधिक श्रम करना पड़ता है, कि यह श्रम उनके लिये किया जाता है, कि अगर वे प्याले तोड़ेंगे तो चाय पीने के लिये उनके पास कुछ नहीं रहेगा और अगर वे दूध गिरायेंगे तो उनके खाने-पीने को कुछ नहीं रहेगा और वे भूख से मर जायेंगे।

बच्चों ने मां के इन शब्दों को जिस शान्ति और उदासीनतापूर्ण अविश्वास के साथ सुना, लेविन उससे दंग रह गया। उन्हें केवल इसी बात का दुख था कि उनका दिलचस्प खेल रोक दिया गया था और मां ने जो कुछ कहा, उन्होंने उसके एक भी शब्द पर विश्वास नहीं किया। उन्हें इसलिये विश्वास नहीं हो सकता था कि जिन चीज़ों का वे उपयोग करते थे, उसके पूरे परिमाण की कल्पना करने में असमर्थ थे और इसीलिये यह कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि जो कुछ वे नष्ट कर रहे हैं, उसी से जीवित रहते हैं।

"ये सब तो अपने आप ही बनते हैं," उन्होंने सोचा, "और इसमें दिलचस्प तथा महत्त्वपूर्ण कुछ भी नहीं, क्योंकि ऐसा हमेशा था और आगे भी रहेगा। और हमेशा बार-बार यही दोहराया जाता है। इसके बारे में हमें सोचने की कोई ज़रूरत नहीं, यह तो तैयार ही है – हम कुछ अपना और नया सोचना चाहते हैं। सो हमने रस्पबेरियों को प्याले में डालकर उन्हें मोमबत्ती पर भूनने तथा फ़व्वारे की तरह एक-दूसरे के मुंह में दूध डालने की बात सोच निकाली। यह मनोरंजक और नयी बात है, प्याले से दूध पीने की तुलना में किसी तरह बुरा नहीं है।"

"क्या हमने, मैंने भी ऐसा ही नहीं किया, जब बुद्धि से प्रकृति की शक्ति का महत्त्व और मानव के जीवन का अर्थ खोजना चाहा?" वह सोचता रहा।

"और क्या सभी दार्शनिक सिद्धान्त भी ऐसा नहीं करते हैं? विचारों के मार्ग से, मानव के लिये पराये और अस्वाभाविक मार्ग से उसे उस चीज़ का ज्ञान करवाते हैं, जो वह कभी का जानता है और

इतनी अच्छी तरह जानता है कि उसके बिना ज़िन्दा ही नहीं रह सकता था? क्या हर दार्शनिक के सिद्धान्त के विकास में यह स्पष्ट दिखाई नहीं देता कि वह किसान फ़्योदोर की भांति पहले से ही निश्चित रूप में, लेकिन उससे कुछ अधिक स्पष्ट रूप में नहीं, जीवन का मुख्य अर्थ जानता है और केवल सन्देहपूर्ण बौद्धिक मार्ग से वहां लौटना चाहता है, जो सभी को स्पष्ट है?

"ज़रा बच्चों को अकेले छोड़ दिया जाये कि वे स्वयं ही सब कुछ प्राप्त करें, बर्तन बनायें, दूध दुहें, आदि, आदि। तब क्या वे शरारतें करते? वे भूख से मर जाते। इसी तरह से अगर हमें हमारी चित्तवृत्तियों, विचारों, एक भगवान और स्रष्टा की धारणा के बिना छोड़ दिया जाये! या फिर इस विचार के बिना कि भलाई क्या होती है, या फिर नैतिक बुराई की व्याख्या के बिना।

"इन धारणाओं के बिना कुछ निर्मित तो करके देखिये!

"हम नष्ट इसीलिये करते हैं कि आत्मिक रूप से भरे हुए हैं। मतलब यह कि बच्चे हैं!

"मेरे पास किसान के साथ साझा और एकमात्र चैन देनेवाला आनन्दपूर्ण ज्ञान कहां से आया? कहां से मैंने इसे प्राप्त किया?

"भगवान और ईसाई धर्म की धारणा से शिक्षित, उन्हीं आत्मिक वरदानों से जीवन को भर लेनेवाला, जो मुझे ईसाई धर्म ने दिये, इन्हीं वरदानों से ओत-प्रोत और इन्हीं के सहारे जीनेवाला मैं बच्चों की भांति इसे न समझते हुए इन्हें नष्ट कर रहा हूं, यानी उसे नष्ट करना चाहता हूं, जिसके सहारे जीवित हूं। किन्तु जैसे ही जीवन में कोई महत्त्वपूर्ण क्षण आता है, उसी प्रकार जैसे बच्चों को जब ठण्ड और भूख का सामना करना पड़ता है, मैं भगवान के पास जाता हूं और अनुभव करता हूं कि बच्चों की तुलना में, जिन्हें उनकी मां उनकी शरारतों के लिये डांटती-डपटती है, सभी चीज़ों के बाहुल्य के कारण मेरी बच्चों जैसी हरकतें करने की कोशिश के लिये भी मुझे कुछ बुरा-भला नहीं कहा जाता।

"हां, मैं जो कुछ जानता हूं, वह बुद्धि से नहीं, बल्कि यह ज्ञान तो मुझे दिया गया है, मेरे सामने खोला गया है, इसे हृदय से जानता हूं और उस मुख्य चीज़ में विश्वास करता हूं, जो ईसाई धर्म मुझे बताता है।

"ईसाई धर्म? ईसाई धर्म!" लेविन ने दोहराया, उसने दूसरी ओर करवट ले ली और कोहनी का सहारा लेकर दूरी पर दूसरे तट से नदी की ओर जाते हुए पशुओं के झुण्ड को देखने लगा।

"किन्तु क्या मैं ईसाई धर्म की सारी शिक्षा में विश्वास कर सकता हूं?" उसने अपने आपको परखते और वह सब ध्यान में लाते हुए सोचा, जो उसकी इस समय की मानसिक शान्ति को नष्ट कर सकता था। वह जान-बूझकर ईसाई धर्म की उन शिक्षाओं को याद करने लगा, जो हमेशा उसे सबसे अधिक अजीब लगती थीं और उसके मन में सन्देह पैदा करती थीं। सृष्टि? किन्तु मैंने अस्तित्व को कैसे स्पष्ट किया था? अस्तित्व से? किसी से भी नहीं? शैतान और गुनाह? और बुराई को मैं कैसे स्पष्ट करता हूं?.. और मुक्तिदाता?..

"किन्तु मैं उसके सिवा, जो मुझे दूसरों के साथ बताया गया, कुछ भी, कुछ भी तो नहीं जानता और नहीं जान सकता।"

और उसे अब यह प्रतीत हुआ कि ईसाई धर्म के विश्वासों में से एक भी तो ऐसा नहीं था, जो मुख्य चीज़ – मानव जीवन के एकमात्र ध्येय के रूप में भगवान, भलाई में उसकी आस्था का खण्डन कर सके।

इस तरह ईसाई धर्म के हर विश्वास का अर्थ आवश्यकताओं की पूर्ति के बजाय सचाई की सेवा में विश्वास लगाया जा सकता था। और हर विश्वास न केवल इसका खण्डन नहीं करता, बल्कि इसलिये आवश्यक भी था कि पृथ्वी पर स्थायी रूप से होनेवाला वह मुख्य चमत्कार भी होता रहे, जो करोड़ों विभिन्न प्राणियों के साथ – बुद्धिमानों और कुछ सिरफिरों, बच्चों और बूढ़ों, किसानों, ल्वोव, कीटी, फ़क़ीरों और बादशाहों के साथ – हर किसी के लिये यक़ीनी तौर पर समान रूप से सोचना-समझना संभव करे और आत्मा के लिये जीना संभव करे, केवल जिसके लिये जीना ही मानी रखता है और जिसे हम मूल्यवान मानते हैं।

चित लेटा हुआ अब वह ऊंचे, निर्मल आकाश को ताक रहा था। "क्या मैं यह नहीं जानता हूं कि यह असीम विस्तार है और गोल मेहराब नहीं है? किन्तु मैं अपनी आंखों को कितना ही क्यों न सिकोड़ूं और अपनी नज़र पर कितना ही ज़ोर क्यों न डालूं, मैं उसे गोल और सीमित देखे बिना नहीं रह सकता और असीम विस्तार के अपने ज्ञान

के बावजूद मैं निस्सन्देह तब सही होता हूं, जब मैं ठोस, हल्की नीली मेहराब देखता हूं, मैं उसकी तुलना में अधिक सही होता हूं, जब उस मेहराब के आगे देख पाने के लिये अपनी दृष्टि पर ज़ोर डालता हूं।"

लेविन ने सोचना बन्द कर दिया था और मानो रहस्यपूर्ण ध्वनियों को सुन रहा था, जो आपस में किसी चीज़ के बारे में हर्ष तथा चिन्तापूर्ण ढंग से कुछ बातें कर रही थीं।

"क्या यह आस्था ही है?" अपनी ख़ुशी पर विश्वास करने से डरते हुए उसने सोचा। "हे भगवान, मैं आभारी हूं आपका!" गले में उठती सिसकियों को निगलते और आंसुओं से भरी आंखों को दोनों हाथों से पोंछते हुए उसने कहा।

(१४)

लेविन अपने सामने देख रहा था, उसने पशुओं का झुण्ड और उसके बाद अपनी घोड़ा-गाड़ी देखी, जिसमें मुश्की घोड़ा जुता हुआ था, कोचवान को देखा, जिसने पशुओं के झुण्ड के क़रीब आकर चरवाहे से कुछ बातचीत की। इसके बाद उसने अपने निकट पहियों की आवाज़ और ख़ूब अच्छी तरह से खिलाये-पिलाये जानेवाले घोड़े का भर्राटा सुना। किन्तु वह अपने विचारों में इतना डूबा-खोया हुआ था कि कोचवान के अपने पास आने के कारण के बारे में नहीं सोच पाया।

उसे इस बात का तभी ध्यान आया, जब कोचवान ने बिल्कुल निकट आकर ऊंची आवाज़ में कहा –

"मालकिन ने आपके पास भेजा है। आपके भाई और कोई अन्य साहब आये हैं।"

लेविन ने घोड़ा-गाड़ी में बैठकर लगामें अपने हाथ में ले लीं।

लेविन ऐसे अनुभव करता हुआ मानो उसे गहरी नींद से जगा दिया गया हो, देर तक नहीं सम्भल सका। उसने तगड़े घोड़े की टांगों के बीच और गर्दन पर उस जगह फेन को ध्यान से देखा, जहां डोरियां रगड़ खाती थीं, अपनी बग़ल में बैठे इवान कोचवान को ग़ौर से देखा और उसे यह याद हो आया कि उसे भाई के

आने की प्रतीक्षा थी, कि उसके देर तक अनुपस्थित रहने के कारण पत्नी सम्भवतः चिन्तित होगी और यह अनुमान लगाने का प्रयास किया कि भाई के साथ आनेवाला मेहमान कौन हो सकता है। अब भाई, पत्नी और अनजान मेहमान उसे पहले की तुलना में भिन्न प्रतीत हुए। उसे लगा कि अब सभी लोगों के साथ उसके सम्बन्ध भिन्न होंगे।

"भाई के साथ वह परायापन नहीं होगा, जो हमेशा हमारे बीच रहा था – वाद-विवाद नहीं होगा; कीटी के साथ झगड़ा कभी नहीं होगा; मेहमान के साथ, वह चाहे कोई भी क्यों न हो, प्यार और दयालुता से पेश आऊंगा; नौकरों-चाकरों, इवान के साथ भी बिल्कुल दूसरा ही रवैया होगा।"

बेसब्री से भर्राटे लेते और अधिक तेज़ी से दौड़ने के लिये उत्सुक तगड़े घोड़े की लगामें कसे हुए लेविन ने अपने निकट बैठे इवान की तरफ़ देखा, जो यह नहीं जानता था कि ख़ाली रह गये हाथों का क्या करे और लगातार अपनी क़मीज़ को नीचे दबाता जा रहा था। लेविन उसके साथ बातचीत शुरू करने का कोई आधार ढूंढ़ रहा था। उसने कहना चाहा कि व्यर्थ ही उसने ज़ीन को इतना ऊंचा कस दिया, किन्तु यह तो उसकी भर्त्सना करना होता और वह उससे कुछ प्यार भरे शब्द कहना चाहता था। किन्तु कोई दूसरी बात उसके दिमाग़ में आ नहीं रही थी।

"घोड़े को दायें कर लेने की इजाज़त दीजिये, वहां ठूंठ है," कोचवान ने लेविन के हाथ में लगाम ठीक करते हुए कहा।

"कृपया लगाम को नहीं छेड़ो और मुझे शिक्षा नहीं दो!" कोचवान के इस तरह दख़ल देने पर लेविन ने झल्लाकर कहा। सदा की भांति, इस समय की दख़लंदाज़ी से भी वह बिगड़ उठा और उसने दुखी मन से यह अनुभव किया कि उसका ऐसा मानना कितना ग़लत था कि उसकी नयी मनःस्थिति यथार्थ से वास्ता पड़ने पर उसे उसी क्षण बदल सकती है।

घर से थोड़ी दूर रह जाने पर लेविन ने ग्रीशा और तान्या को अपनी ओर भागे आते देखा।

"मौसा कोस्त्या! मां आ रही हैं, नाना भी, सेर्गेई इवानोविच और एक अन्य व्यक्ति भी," उन्होंने घोड़ा-गाड़ी में बैठते हुए कहा।

"यह अन्य व्यक्ति कौन है?"

"बहुत ही भयानक है! हाथों को ऐसे करता है," तान्या ने घोड़ा-गाड़ी में खड़े होकर कातावासोव की नक़ल करते हुए कहा।

"बूढ़ा है या जवान?" लेविन ने हंसते हुए पूछा, जिसे तान्या के इस अभिनय से किसी की याद आ गयी थी।

"काश, कोई अप्रिय व्यक्ति न हो!" लेविन ने मन में सोचा।

सड़क का मोड़ मुड़ते ही लेविन को अपनी ओर आते लोग दिखाई दिये और उसने पुआल का टोप पहने कातावासोव को पहचान लिया, जो उसी तरह से हाथ हिलाता हुआ आ रहा था, जैसे तान्या ने अभिनय करके बताया था।

कातावासोव को दर्शनशास्त्र की चर्चा करना बहुत पसन्द था, जिसके विचार उसने प्रकृतिविज्ञानियों से लिये थे, जिन्होंने दर्शनशास्त्र का कभी अध्ययन नहीं किया था। लेविन ने पिछली बार मास्को में उसके साथ काफ़ी बहस की थी।

ऐसी ही एक बातचीत की, जिसमें कातावासोव ने स्पष्टतः यह अनुभव किया था कि उसका पलड़ा भारी रहा है, लेविन को उसे पहचानने पर सबसे पहले याद हो आई।

"नहीं, मैं बहस नहीं करूंगा और चंचलता से अपने विचारों को अभिव्यक्त नहीं करूंगा," उसने सोचा।

घोड़ा-गाड़ी से नीचे उतरकर, अपने भाई और कातावासोव से हाथ मिलाने के बाद उसने पत्नी के बारे में पूछा।

"वह मीत्या को घर के पासवाले कोलोक जंगल में ले गयी है। वह उसे वहां सुलाना चाहती है, क्योंकि घर में बहुत गर्मी है," डौली ने कहा।

बच्चे को जंगल में ले जाने के बारे में लेविन हमेशा पत्नी को मना करता रहता था, क्योंकि इसे ख़तरनाक मानता था और इसलिये उसे यह ख़बर अच्छी नहीं लगी।

"उसे जहां-तहां ले जाती रहती है," बूढ़े प्रिंस ने मुस्कराकर कहा। "मैंने उसे सलाह दी थी कि बच्चे को बर्फ़ वाले तहख़ाने में ले जाये।"

"वह मधुमक्खी पालनशाला में जाना चाहती थी। उसका ख़्याल था कि तुम वहां हो। हम वहीं जा रहे हैं," डौली ने कहा।

"तो तुम आजकल क्या कर रहे हो?" कोज़्निशेव ने दूसरों से पीछे रहते और भाई के बराबर होते हुए पूछा।

"कोई ख़ास काम नहीं। हमेशा की तरह खेतीबारी में लगा रहता हूं," लेविन ने उत्तर दिया। "काफ़ी दिनों के लिये आये हो न? हम तो बहुत दिनों से राह देख रहे हैं।"

"दो हफ़्ते के लिये। मास्को में बहुत काम है।"

इन शब्दों पर दोनों भाइयों की नज़रें मिलीं और लेविन के मन में भाई के साथ मैत्रीपूर्ण, मुख्यतः सीधे-सरल सम्बन्धों की सदा बनी रहनेवाली चाह के बावजूद, जो अब और भी प्रबल हो गयी थी, उसने अनुभव किया कि उससे नज़र मिलाते हुए उसे झेंप अनुभव हो रही है। उसने दृष्टि झुका ली और समझ नहीं पा रहा था कि क्या कहे।

बातचीत के ऐसे विषय चुनने का प्रयास करते हुए, जो कोज़्निशेव को पसन्द हों और सेर्ब युद्ध तथा स्लाव प्रश्न से उसका ध्यान हटा सकें, जिनकी ओर उसने मास्को में अपनी व्यस्तता के उल्लेख में संकेत किया था, लेविन ने कोज़्निशेव की पुस्तक की चर्चा आरम्भ कर दी।

"तो तुम्हारी किताब के बारे में समीक्षायें निकलीं?" उसने पूछा।

लेविन ने पहले से सोचकर यह प्रश्न किया है, कोज़्निशेव इस बात पर मुस्करा दिया।

"कोई इसकी चिन्ता नहीं कर रहा और मैं दूसरों से भी कम," उसने उत्तर दिया। "दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना, उधर देखिये, बारिश होगी," उसने ऐस्प पेड़ों की फुनगियों के ऊपर नज़र आनेवाले कुछ सफ़ेद बादलों की ओर छाते से संकेत करते हुए कहा।

इन शब्दों के कहे जाते ही दोनों भाइयों के बीच शत्रुता का नहीं, किन्तु रुखाई का वह सम्बन्ध फिर से स्थापित हो गया, जिससे बचने को लेविन इतना अधिक उत्सुक था।

लेविन कातावासोव के पास चला गया।

"कितना अच्छा किया आपने कि यहां आने का विचार बना लिया," उसने कहा।

"बहुत अर्से से चाह रहा था। अब खूब बातचीत होगी। स्पेन्सर पढ़ा है?"

"नहीं, पूरा नहीं पढ़ा," लेविन ने जवाब दिया। "वैसे, मुझे अब ऐसा करने की ज़रूरत भी नहीं।"

"यह क्या कह रहे हैं? बड़ी दिलचस्प बात है। भला क्यों?"

"मुझे पूरी तरह से विश्वास हो गया है कि जिन प्रश्नों में मेरी रुचि है, उनके उत्तर मुझे स्पेन्सर या वैसे ही अन्य लोगों में नहीं मिलेंगे। अब ..."

किन्तु कातावासोव के चेहरे के शान्त और प्रफुल्ल भाव ने उसे सहसा ऐसे चकित किया और उसे अपने मूड पर ऐसा तरस आया, जिसे वह इस बातचीत से स्पष्टतः नष्ट कर रहा था, कि अपने इरादे को याद करते हुए उसने बीच में ही बात रोक दी।

"ख़ैर, बाद में चर्चा करेंगे," उसने इतना और जोड़ दिया। "अगर मधुमक्खी पालनशाला में चलना है, तो इधर, इस पगडंडी से आइये," उसने सभी को सम्बोधित किया।

एक संकरी पगडंडी पर चलते हुए घास से ढके वन-प्रांगन में पहुंचने पर, जो एक ओर से चटकीले पैन्जा फूलों से घिरा था और जिनके बीच गहरे हरे रंग की हैलीबोर की झाड़ियां उगी हुई थीं, लेविन ने अपने मेहमानों को नौ उम्र ऐस्प वृक्षों की घनी छाया में मधुमक्खियों से डरनेवाले आगन्तुकों के लिये विशेष रूप से बनायी गयी बैंच और ठूंठों पर बिठा दिया और स्वयं बच्चों तथा वयस्कों के लिये रोटी, खीरे और ताज़ा शहद लाने के लिये झोंपड़े में चला गया।

कम से कम द्रुत गति से हिलने-डुलने का प्रयास करते और अधिकाधिक अक्सर निकट से उड़कर गुज़रनेवाली मधुमक्खियों की भिनभिनाहट को सुनते हुए वह पगडंडी पर चलकर झोंपड़े तक पहुंच गया। ड्योढ़ी के बिल्कुल निकट ही एक मधुमक्खी उसकी दाढ़ी में फंसकर ज़ोर से भिनभिना उठी। किन्तु उसने सावधानी से उसे दाढ़ी में से निकाल दिया। छायादार ड्योढ़ी में जाकर उसने खूंटी पर लट-

कता हुआ जाल उतारा, उसे पहनकर तथा जेबों में हाथ डालकर मधुमक्खी पालनशाला तक चला गया, जिसके गिर्द बाड़ बनी हुई थी और जहां घास से साफ़ की हुई जगह पर सीधी क़तारों में छाल द्वारा खूंटों से बंधे उसके जाने-पहचाने पुराने छत्ते रखे थे, जिनमें से प्रत्येक का अपना इतिहास था। बाड़ के बराबर नये, इस वर्ष के छत्ते लगाये गये थे। छत्तों में दाख़िल होने के सूराख़ों के सामने एक ही जगह पर भीड़ लगाकर और खेलती हुई मधुमक्खियां झलक दिखा रही थीं और काम करनेवाली मधुमक्खियां एक ही दिशा में, फूलों से लदे लाइम वृक्षों के जंगल की ओर जाती थीं और वहां से रस लिये हुए छत्तों की तरफ़ वापस आती थीं।

उसके कानों में लगातार तरह-तरह की आवाज़ें आ रही थीं, कभी तो काम में व्यस्त, तेज़ी से उड़ती हुई पास से गुज़रनेवाली मधुमक्खी की, कभी भिनभिनाते काहिल नर मधुमक्खी की, तो कभी चौकीदारी करनेवाली उत्तेजित मधुमक्खियों की, जो शत्रु से अपने ख़ज़ाने की रक्षा करती थीं और डंक मारने को तैयार थीं। बाड़ के दूसरी ओर बूढ़ा लकड़ी की पतरी पर रन्दा फेर रहा था और उसने लेविन को नहीं देखा। लेविन मधुमक्खी पालनशाला के मध्य में रुक गया और उसने बूढ़े को नहीं पुकारा।

वह अकेला रह जाने पर ख़ुश था, ताकि वास्तविकता से, जिसने उसके मूड को इतना अधिक ख़राब कर दिया था, अपने को उबार सके।

उसे याद आया कि वह इवान पर बिगड़ चुका है, भाई के प्रति रुखाई दिखा चुका है और कातावासोव के साथ अगम्भीर ढंग से बात कर चुका है।

"क्या वह क्षणिक मन:स्थिति थी, जो अपना चिह्न तक छोड़े बिना समाप्त हो जायेगी?" वह सोच रहा था।

किन्तु उसी क्षण अपनी मन:स्थिति में लौटते हुए उसने सहर्ष यह अनुभव किया कि उसके भीतर कोई नयी और महत्त्वपूर्ण बात हो गयी है। वास्तविकता ने कुछ ही समय के लिये उस आत्मिक चैन पर, जो उसने प्राप्त किया था, पर्दा डाल दिया था, मगर वह उसके मन में अक्षुण्ण था।

जिस प्रकार इस समय उसके इर्द-गिर्द उड़ती, डराती और उसका

ध्यान बंटाती हुई मधुमक्खियां उसे उसके पूरे शारीरिक चैन से वंचित कर रही थीं, उनसे बचने के लिये उसे सिकुड़ने-सिमटने को विवश कर रही थीं, ठीक इसी प्रकार उन चिन्ताओं ने, जिन्होंने घोड़ा-गाड़ी में बैठते ही उसे घेर लिया था, उसे आत्मिक स्वतंत्रता से वंचित कर दिया था। किन्तु ऐसा केवल तभी तक जारी रहा, जब तक वह उनके बीच था। जिस प्रकार मधुमक्खियों के बावजूद उसकी सारी शारीरिक शक्ति सुरक्षित थी, वैसे ही नवनिर्मित आत्मिक शक्ति भी क़ायम थी।

(१५)

"तुम्हें मालूम है, कोस्त्या, कि सेर्गेई इवानोविच के साथ गाड़ी में कौन था?" बच्चों में शहद और खीरे बांटने के बाद डौली ने कहा। "व्रोन्स्की। वह सेर्बिया की लड़ाई में जा रहा है।"

"सो भी अकेला नहीं, बल्कि एक दस्ता भी अपने ख़र्च पर साथ ले जा रहा है!" कातावासोव ने बताया।

"यह उसके अनुरूप है," लेविन ने कहा। "क्या स्वयंसेवक अभी भी मोर्चे पर जा रहे हैं?" कोज़्निशेव की ओर देखते हुए उसने पूछा।

कोज़्निशेव ने कोई उत्तर नहीं दिया, क्योंकि वह छत्ते के एक सफ़ेद टुकड़े के शहद में फंसी हुई मधुमक्खी को चाक़ू के कुन्द हिस्से से बहुत सावधानीपूर्वक प्याले से बाहर निकालने में व्यस्त था।

"बिल्कुल जा रहे हैं! काश, आपने देखा होता कि कल स्टेशन पर क्या हो रहा था!" कातावासोव ने ज़ोर से खीरे को काटते हुए कहा।

"इस सब का क्या अर्थ है? सेर्गेई इवानोविच, ईसा मसीह के नाम पर मुझे यह समझाइये कि ये सब स्वयंसेवक कहां जा रहे हैं, किसके विरुद्ध लड़ते हैं?" बूढ़े प्रिंस ने स्पष्टतः उस बातचीत को आगे बढ़ाते हुए पूछा, जो लेविन की अनुपस्थिति में आरम्भ हुई थी।

"तुर्कों के साथ," कोज़्निशेव ने शहद से काली हुई और असहाय-सी स्थिति में पैरों को हिलाती-डुलाती मधुमक्खी को चाक़ू से ऐस्प के मज़बूत पत्ते पर बिठाते हुए बड़े इतमीनान से मुस्कराकर जवाब दिया।

"मगर तुर्कों के विरुद्ध युद्ध किसने घोषित किया है? इवान इवानोविच रागोज़ोव और मदाम श्ताल के साथ काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने?"

"युद्ध किसी ने घोषित नहीं किया, किन्तु लोग अपने जाति-बन्धुओं के दुख-कष्टों के प्रति सहानुभूति अनुभव करते हुए उनकी सहायता करना चाहते हैं," कोज़्निशेव ने उत्तर दिया।

"मगर प्रिंस मदद की बात नहीं कर रहे हैं," लेविन ने ससुर का पक्ष लेते हुए कहा, "बल्कि युद्ध की। प्रिंस का कहना है कि सरकार की अनुमति के बिना लोग अपने तौर पर युद्ध में भाग नहीं ले सकते।"

"कोस्त्या, इसे देखो, इस मधुमक्खी को! ज़रूर कोई न कोई हमें डंक मार देगी!" डौली ने हाथ हिलाकर ततैये को दूर भगाते हुए कहा।

"यह मधुमक्खी नहीं, ततैया है," लेविन ने कहा।

"तो कहिये, कहिये जनाब, आपका इस बारे में क्या सिद्धांत है?" कातावासोव ने मुस्कराकर प्रश्न किया। वह स्पष्टतः लेविन को बहस के मैदान में उतरने के लिये ललकार रहा था। "लोग अपने तौर पर ऐसा करने का क्यों अधिकार नहीं रखते?"

"मेरा सिद्धांत यह है कि युद्ध एक तरफ़ तो ऐसी पाशविक, क्रूर और भयानक चीज़ है कि किसी ईसाई की तो बात दूर, कोई भी आदमी व्यक्तिगत रूप से युद्ध आरम्भ करने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर नहीं ले सकता, केवल सरकार ही ऐसा कर सकती है, जिसका यह अधिकार-क्षेत्र है और जो अनिवार्य रूप से युद्ध में घसीट ली जाती है। दूसरी ओर, विज्ञान और साधारण सूझ-बूझ की दृष्टि से भी राजकीय मामलों, विशेषकर युद्ध के मामले में साधारण नागरिक अपनी इच्छा का परित्याग कर देते हैं।"

कोज़्निशेव और कातावासोव दोनों ही अपनी पहले से तैयार आपत्तियों के साथ एक बार ही बोल उठे।

"यही तो बात है प्यारे कि ऐसी स्थितियां भी हो सकती हैं, जब सरकार नागरिकों की इच्छा पूरी नहीं करती और तब समाज अपनी इच्छा व्यक्त करता है," कातावासोव ने कहा।

किन्तु कोज़्निशेव ने स्पष्टतः इस आपत्ति का समर्थन नहीं किया।

उसने कातावासोव के शब्दों पर नाक-भौंह सिकोड़ी और दूसरी बात कही –

"प्रश्न को इस तरह प्रस्तुत करना ठीक नहीं। यह युद्ध की घोषणा नहीं, बल्कि मानवीय, ईसाई भावनाओं की अभिव्यक्ति है। भाइयों, एक ही रक्त और एक ही धर्म के माननेवालों की हत्या की जा रही है। किन्तु मान लें कि भाइयों, एक ही रक्त और एक ही धर्मानुयायियों को नहीं, बल्कि बच्चों, नारियों और बूढ़ों को मौत के घाट उतारा जा रहा है, भावनायें भड़क उठती हैं और रूसी लोग इन भयानक हत्या-काण्डों को समाप्त करवाने के लिये भागे जाते हैं। कल्पना करो कि तुम सड़क पर जा रहे हो और यह देखते हो कि शराबी लोग किसी नारी या बच्चे को पीट रहे हैं। मेरे ख़्याल में तब तुम यह न पूछते कि इस व्यक्ति के विरुद्ध युद्ध घोषित किया गया है या नहीं, बल्कि तुम उस पर टूट पड़े होते और तुमने मासूम की रक्षा की होती।"

"किन्तु मैंने उसकी हत्या न की होती," लेविन ने कहा।

"नहीं, तुमने हत्या कर दी होती।"

"मैं नहीं जानता। अगर मैंने ऐसा देखा होता, तो उस समय जैसी भावनायें मुझ पर हावी हो जातीं, मैं वैसे ही करता। किन्तु मैं पहले से ही कुछ नहीं कह सकता। उत्पीड़ित स्लावों के लिये ऐसी स्वतःस्फूर्त भावना नहीं है और न ही हो सकती है।"

"हो सकता है कि तुम्हारे लिये न हो। मगर दूसरों के लिये है," कोज़्निशेव ने अप्रसन्नता से माथे पर बल डालते हुए कहा। "जनता में 'काफ़िर तातारों' के जुए तले ईसाई धर्म के अनुयायियों के दुख-दर्दों की दास्तान अभी तक जीवित है। जनता ने अपने भाइयों की मुसीबतों के बारे में सुना और वह अपना विरोध प्रकट किये बिना न रह सकी।"

"सम्भव है," लेविन ने बात टालते हुए कहा। "किन्तु मैं ऐसा नहीं देखता हूं। मैं भी तो जनता में से हूं, मैं ऐसा अनुभव नहीं करता।"

"मुझे ही ले लीजिये," बूढ़े प्रिंस ने कहा। "मैं विदेश में रह रहा था, अख़बार पढ़ता था और स्वीकार करता हूं कि बल्गारियाई अत्याचारों के पहले किसी तरह भी यह नहीं समझ पा रहा था कि सभी रूसियों को अचानक अपने स्लाव भाइयों से इतना अधिक प्यार क्यों हो गया

और मैं उनके प्रति कोई प्यार अनुभव नहीं करता हूं? मुझे बेहद परेशानी होती थी, सोचता था कि या तो मैं बड़ा घटिया आदमी हूं या फिर कार्ल्सबाद का पानी मुझ पर ऐसा प्रभाव डालता है। किन्तु यहां आकर मैं शान्त हो गया – देखता हूं कि मेरे अलावा भी ऐसे लोग हैं, जो स्लाव भाइयों में नहीं, बल्कि केवल रूस में दिलचस्पी लेते हैं। मिसाल के तौर पर कोन्स्तान्तीन।"

"व्यक्तिगत विचार इस मामले में कोई महत्त्व नहीं रखते," कोज़्निशेव ने कहा। "व्यक्तिगत विचार कोई अर्थ नहीं रखते, जब पूरे रूस – पूरी जनता ने अपनी इच्छा व्यक्त कर दी है।"

"मैं माफ़ी चाहता हूं, मुझे ऐसा दिखाई नहीं देता। आम लोग तो जानते तक नहीं," प्रिंस ने कहा।

"नहीं, पापा ... जानते कैसे नहीं। इतवार के दिन गिरजे में?" बातचीत को सुन रही डौली ने कहा। "कृपया, तौलिया इधर दे दो," उसने मुस्कराते हुए बच्चों की ओर देख रहे बूढ़े को सम्बोधित किया। "ऐसा तो नहीं हो सकता कि सभी ..."

"इतवार को गिरजे में क्या हुआ था? पादरी से कुछ पढ़ने को कहा गया, उसने पढ़ दिया। लोगों के पल्ले कुछ नहीं पड़ा और वे उसी तरह आहें भरते रहे, जैसे हर उपदेश के समय करते हैं," बूढ़े प्रिंस कहते गये। "बाद में उनसे कहा गया कि पुण्य कार्य के लिये गिरजे में पैसे जमा किये जा रहे हैं और उन्होंने एक-एक कोपेक दे दिया। किन्तु किसलिये – उन्हें यह मालूम नहीं है।"

"जनता न जानती हो, ऐसा नहीं हो सकता। उसमें अपने भाग्य की चेतना हमेशा रहती है और इस समय जैसे क्षणों में वह और भी अधिक स्पष्ट हो जाती है," बूढ़े मधुमक्खियों के पालक की ओर देखते हुए कोज़्निशेव ने ज़ोर देकर कहा।

सफ़ेद होती हुई काली दाढ़ी और पके रुपहले बालों वाला सुन्दर बूढ़ा शहद से भरा प्याला हाथ में लिये निश्चल खड़ा था और अपनी ऊंचाई से स्नेह तथा शान्ति से इन महानुभावों को देख रहा था, स्पष्टतः कुछ भी नहीं समझ रहा था और समझना भी नहीं चाहता था।

"यह बिल्कुल सही है," अर्थपूर्ण ढंग से सिर हिलाते हुए बूढ़े ने कोज़्निशेव के शब्दों के बारे में कहा।

"तो इसी से पूछ देखिये। वह न तो कुछ जानता है और न ही सोचता है," लेविन ने कहा। "मिख़ाइलोविच, तुमने जंग के बारे में सुना है न?" उसने बूढ़े को सम्बोधित किया। "मेरा मतलब उससे है जो गिरजे में कहा गया? तुम्हारा क्या ख़्याल है? क्या हमें ईसाइयों के लिये लड़ना चाहिये?"

"हमें क्या ज़रूरत है सोचने की? सम्राट अलेक्सान्द्र निकोलायेविच ने पहले हमारे लिये सोचा और आगे भी सभी मामलों में सोच लेगा। वह हम सबसे ज़्यादा अच्छी तरह सब कुछ जानता है। क्या और रोटी लाऊं? लड़के को और दूं?" उसने ग्रीशा की ओर संकेत करते हुए, जो रोटी का अपना टुकड़ा ख़त्म कर रहा था, डौली से पूछा।

"मुझे पूछने की आवश्यकता नहीं," कोज़्निशेव ने कहा, "हमने अपनी आंखों से ऐसे सैकड़ों लोग देखे हैं और देख रहे हैं, जो अपना सब कुछ छोड़-छाड़कर रूस के सभी भागों से न्यायपूर्ण ध्येय में योग देने के लिये आ रहे हैं और बिल्कुल सीधे तथा स्पष्ट रूप से अपना विचार और लक्ष्य व्यक्त करते हैं। वे अपनी कौड़ियां लाते हैं या ख़ुद मोर्चे पर जाते हैं और साफ़-साफ़ कहते हैं कि किसलिये ऐसा कर रहे हैं। क्या अर्थ है इसका?"

"मेरे विचार में इसका अर्थ है," लेविन ने कहना शुरू किया, जो ग़ुस्से में आने लगा था, "कि आठ करोड़ लोगों में हमेशा सैकड़ों ही नहीं, जैसा कि इस समय हो रहा है, बल्कि दसियों हज़ार ऐसे सिरफिरे और सामाजिक स्थिति से वंचित लोग मिल जायेंगे, जो हमेशा कहीं भी – पुगाचोव के गिरोह में, ख़ीवा या सेर्बिया – जाने को तैयार होंगे..."

"मैं तुमसे कह रहा हूं कि सैकड़ों नहीं, सिरफिरे लोग भी नहीं, बल्कि जनता के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि!" कोज़्निशेव ने ऐसी झल्लाहट से कहा मानो वह अपनी अन्तिम पूंजी की रक्षा कर रहा हो। "और चन्दा? इस तरह तो सारी जनता अपनी इच्छा को साफ़ तौर पर व्यक्त करती है।"

"'जनता' शब्द बहुत ही अस्पष्ट है," लेविन ने कहा। "सम्भव है कि ज़िलों के क्लर्क, अध्यापक और हज़ार में से एक किसान यह जानता है कि क्या मामला है। बाक़ी मिख़ाइलोविच जैसे आठ करोड़

न केवल अपनी इच्छा ही नहीं व्यक्त करते हैं, बल्कि उन्हें तो इस बात का आभास तक नहीं है कि किस बारे में अपनी इच्छा व्यक्त करें। हमें ऐसा कहने का भला क्या अधिकार है कि यह जनता की इच्छा है?"

(१६)

तर्क-वितर्क में बहुत अनुभवी कोज़्निशेव ने कोई आपत्ति न करते हुए बातचीत को दूसरी दिशा में मोड़ दिया।

"यदि तुम गणित द्वारा जनता की भावना को जानना चाहते हो, तो स्पष्ट है कि ऐसा कर पाना बहुत कठिन होगा। हमारे यहां अभी तक मतदान नहीं है और यह सम्भव भी नहीं है, क्योंकि वह जनता की इच्छा को व्यक्त नहीं करता। किन्तु इसके लिये दूसरे उपाय हैं। इसे वातावरण में, इसे हृदय से अनुभव किया जा सकता है। मैं जनता के ठहरे सागर के नीचे उठनेवाली तरंगों की बात नहीं कर रहा हूं, जो पूर्वाग्रह से मुक्त हरेक व्यक्ति के लिये स्पष्ट हैं। तुम संकुचित अर्थ में ही समाज पर दृष्टि डाल लो। बुद्धिजीवियों के जगत की सभी विभिन्नतापूर्ण पार्टियां, जो पहले एक-दूसरी की इतनी अधिक विरोधी थीं, वे सभी मिलकर एक हो गयी हैं। उनके सभी मतभेद समाप्त हो गये हैं, सभी सार्वजनिक निकाय एक ही बात कर रहे हैं, सभी ने उस स्वतःस्फूर्त शक्ति को अनुभव कर लिया है, जो उन्हें अपने वश में करके एक ही दिशा में लिये जा रही है।"

"हां, ये तो अख़बार ही हैं, जो एक ही बात कह रहे हैं," बूढ़े प्रिंस ने कहा। "यह सच है। इस हद तक एक ही राग अलाप रहे हैं, जैसे तूफ़ान के पहले मेंढक। इनके कारण ही और कुछ सुनाई नहीं देता।"

"मेंढक हैं या नहीं – मैं अख़बार नहीं निकालता हूं और उनकी सफ़ाई भी देना नहीं चाहता। किन्तु मैं तो बुद्धिजीवियों के क्षेत्र में मतैक्य की बात कर रहा हूं," कोज़्निशेव ने अपने भाई लेविन को सम्बोधित करते हुए कहा।

लेविन ने उत्तर देना चाहा, मगर बूढ़े प्रिंस बीच में ही बोल उठे।

"किन्तु इस मतैक्य के बारे में एक अन्य बात कही जा सकती है," प्रिंस ने कहा। "मेरा दामाद है, स्तेपान अर्कादयेविच, आप

उसे जानते हैं। उसे अब आयोग की कमेटी या ऐसी ही किसी दूसरी जगह पर, जो मुझे याद नहीं, एक पद मिलनेवाला है। मगर वहां करने-धरने को कुछ नहीं – डौली, यह कोई रहस्य तो नहीं है न! – और वहां वेतन होगा आठ हज़ार रूबल वार्षिक। आप उससे पूछ देखिये कि यह नौकरी उपयोगी है या नहीं – वह आपके सामने सिद्ध कर देगा कि इसकी बेहद ज़रूरत है। वह सच बोलनेवाला आदमी है, लेकिन वह आठ हज़ार की उपयोगिता में विश्वास न करे, यह कैसे हो सकता है?"

"हां, स्तेपान अर्काद्येविच ने दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना को यह बताने के लिये कहा था कि यह जगह उसे मिल गयी है," कोज़्निशेव ने यह अनुभव करते हुए कि प्रिंस बात को कहीं और लिये जा रहे हैं, अप्रसन्नता से कहा।

"अख़बारों का मतैक्य भी इसीलिये है। मुझे समझाया गया है कि जैसे ही जंग छिड़ती है, वैसे ही उनकी आमदनी दुगुनी हो जाती है। वे जनता और स्लावों के भाग्य... और ऐसी ही दूसरी बातों की भला चिन्ता क्यों न करें?"

"मुझे बहुत-से अख़बार अच्छे नहीं लगते, किन्तु यह न्याय नहीं है," कोज़्निशेव ने कहा।

"मैं सिर्फ़ एक शर्त पेश करना चाहूंगा," बूढ़े प्रिंस कहते गये। "प्रशा के साथ युद्ध होने के पहले अल्फ़ोन्स कार्र ने इस सम्बन्ध में बहुत ही बढ़िया लिखा था – 'आप समझते हैं कि जंग लाज़िमी है? बहुत अच्छी बात है। जो युद्ध का प्रचार करते हैं, उनकी एक विशेष, अग्रणी पलटन बनाकर सबसे आगे-आगे धावा बोलने, हमला करने के लिये भेज दी जाये!'"

"सम्पादक लोग तो अपना ख़ूब रंग दिखायेंगे," कातावासोव ने इस ख़ास पलटन में अपने परिचित सम्पादकों की कल्पना करते हुए ज़ोर का ठहाका लगाकर कहा।

"वे तो भागने लगेंगे," डौली ने कहा, "केवल बाधा ही डालेंगे।"

"अगर भागने लगेंगे, तो पीछे से उन्हें छर्रों या कज़ाकों के कोड़ों का मज़ा दिलवाना चाहिये," बूढ़े प्रिंस ने कहा।

"यह तो मज़ाक़ है और, माफ़ी चाहता हूं, कोई अच्छा मज़ाक़

नहीं है, प्रिंस," कोज़्निशेव ने कहा।

"मुझे तो यह मज़ाक़ नहीं लगता, यह..." लेविन ने कहना शुरू किया, मगर कोज़्निशेव ने उसे टोक दिया।

"समाज के हर सदस्य को उसकी योग्यता के अनुरूप काम करना होता है," उसने कहा, "और बुद्धिजीवी लोग जनमत को अभिव्यक्त करके अपना कर्त्तव्य पूरा करते हैं। और जनमत का मतैक्य तथा उसकी पूर्ण अभिव्यक्ति प्रेस की बड़ी सेवा और साथ ही सुखद बात है। बीस साल पहले हम लोग चुप रहते, मगर अब रूसी जनता की आवाज़ सुनाई दे रही है, जो मिलकर एक व्यक्ति की तरह उठने और अपने उत्पीड़ित भाइयों के लिये बलिदान करने को तैयार है। यह महान क़दम और हमारी शक्ति की पेशगी है।"

"लेकिन सिर्फ़ बलिदान ही नहीं, बल्कि तुर्कों को मारने की बात है," लेविन ने दबी ज़बान से कहा। "लोग अपनी आत्मा के लिये बलिदान करते हैं और बलिदान करने को तैयार हैं, मगर हत्या के लिये नहीं," अनचाहे ही उन विचारों के साथ, जो उसके मन पर हावी थे, इस बातचीत को जोड़ते हुए उसने कहा।

"आत्मा के लिये कैसे? मुझ प्रकृतिवादी के लिये यह बड़ी कठिन अभिव्यक्ति है। यह आत्मा क्या चीज़ है?" कातावासोव ने मुस्कराते हुए पूछा।

"अजी आप जानते हैं!"

"क़सम भगवान की, आभास तक नहीं है मुझे!" कातावासोव ने ज़ोर से हंसकर कहा।

"'मैं अमन नहीं, तलवार लेकर आया हूं,' ईसा मसीह ने कहा है," कोज़्निशेव ने अपनी ओर से इंजील का वह कथन उद्धृत किया, जो मानो सबसे अधिक आसानी से समझ में आनेवाली बात हो और जिससे लेविन को हमेशा बहुत परेशानी होती थी।

"बिल्कुल सही है," इन लोगों के पास खड़े बूढ़े ने संयोगवश अपनी ओर उठी दृष्टि के उत्तर में कहा।

"अरे भैया, तुम्हारा तो कचूमर निकाल दिया गया, एकदम कचूमर निकाल दिया गया!" कातावासोव ख़ुशी से चिल्ला उठा।

लेविन के चेहरे पर झल्लाहट की लाली दौड़ गयी, इसलिये नहीं

कि उसका कचूमर निकाल दिया गया था, बल्कि इस कारण कि वह अपने को वश में नहीं रख सका और बहस करने लगा।

"नहीं, मुझे इनसे बहस नहीं करनी चाहिये," लेविन ने सोचा, "ये लोग अभेद्य कवच पहने हैं और मैं नग्न हूं।"

वह महसूस कर रहा था कि अपने भाई और कातावासोव को अपनी बात नहीं मनवा सकता और ख़ुद उनके साथ सहमत होने की तो और भी कम सम्भावना देख रहा था। वे बुद्धि के उसी घमण्ड का प्रचार कर रहे थे, जिसने उसे लगभग डुबो दिया था। वह इस बात से सहमत नहीं हो सकता था कि उसके भाई समेत दसियों लोगों को राजधानी में आनेवाले बातूनी स्वयंसेवकों के शब्दों के आधार पर यह कहने का अधिकार है कि अख़बारों के साथ वे जनता की इच्छा और विचार को व्यक्त कर रहे हैं और सो भी ऐसे विचार को, जो प्रति-शोध और हत्या में व्यक्त होता है। वह इससे सहमत नहीं हो सकता था, क्योंकि जिन लोगों के बीच रहता था, उसे उनमें इन विचारों की अभिव्यक्ति दिखाई नहीं देती थी और अपने भीतर भी इन विचारों को अनुभव नहीं कर रहा था (और वह अपने को रूसी जनता से अलग मानने को तैयार नहीं था)। मुख्यतः तो वह इसलिये सहमत नहीं हो सकता था कि आम लोगों के साथ-साथ वह ख़ुद भी नहीं जानता था और जान भी नहीं सकता था कि सार्विक कल्याण क्या होता है, किन्तु इतना निश्चित रूप से जानता था कि इस सार्विक कल्याण को भलाई के उस नियम का, जिसे हर व्यक्ति जानता है, कड़ाई से पालन करने पर ही प्राप्त करना सम्भव है, और इसलिये वह किसी भी तरह के साझे उद्देश्यों के लिये न तो युद्ध चाह सकता था और न उसका प्रचार ही कर सकता था। वह मिख़ाइलोविच और जनता का, उस जनता का साथ देते हुए कहता, जिसने स्कैंडिनेवियनों को निमंत्रित करने से सम्बन्धित दन्त-कथा में अपना विचार अभिव्यक्त किया था – "हमारे राजा बनकर हम पर शासन कीजिये। हम सहर्ष पूर्ण अधीनता का वचन देते हैं। सारा श्रम, सारा अपमान और सारा बलिदान अपने ऊपर लेते हैं, किन्तु हम जांच-परख और निर्णय नहीं करते हैं।" किन्तु कोज़्निशेव के शब्दों में जनता अब उस अधिकार से इन्कार कर रही है, जो उसने इतना अधिक मूल्य चुकाकर प्राप्त किया था।

लेविन ने यह भी कहना चाहा कि यदि जनमत इतनी अचूकता से सब कुछ जांच-परख सकता है, तो क्रांति और कम्यून भी उतने ही क़ानूनी क्यों नहीं हैं, जितना कि स्लावों के पक्ष-पोषण का आन्दोलन? किन्तु ये सब ऐसे विचार थे, जो कुछ भी निर्णय नहीं कर सकते थे। हां, एक बात निश्चित रूप से देखी जा सकती थी और वह यह कि इस समय वाद-विवाद से कोज़्निशेव को झल्लाहट हो रही थी और इसलिये बहस जारी रखना उचित नहीं था। लेविन चुप्पी लगा गया और आकाश में घिरते आ रहे बादलों की ओर मेहमानों का ध्यान आकर्षित करते हुए उसने कहा कि बारिश से बचने के लिये घर जाना ठीक होगा।

(१७)

बूढ़े प्रिंस और कोज़्निशेव घोड़ा-गाड़ी में बैठकर चल दिये और बाक़ी लोग तेज़ क़दमों से घर की तरफ़ बढ़ने लगे।

किन्तु सफ़ेद और काले बादल इतनी तेज़ी से उमड़ते आ रहे थे कि बारिश शुरू होने से पहले घर पहुंचने के लिये इन सबको अपनी चाल और तेज़ करने की ज़रूरत थी। कालिख सहित धुएं जैसे काले अग्रणी और नीचे बादल असाधारण गति से आकाश में दौड़ रहे थे। घर अभी दो सौ क़दम दूर था कि ज़ोर से हवा चलने लगी और किसी भी क्षण मूसलधार बारिश की आशा की जा सकती थी।

दहशत और ख़ुशी से चीख़ते हुए बच्चे आगे-आगे भागे जा रहे थे। टांगों के साथ चिपक गये स्कर्टों से बमुश्किल जूझते हुए डौली चल नहीं, बल्कि दौड़ रही थी और बच्चों पर लगातार नज़र टिकाये थी। मर्द लोग अपने टोपों को थामे हुए लम्बे-लम्बे डग भर रहे थे। ये लोग ड्योढ़ी के क़रीब पहुंच गये थे, जब मोटी-सी बूंद गिरी और परनाले के सिरे से टकराकर बिखर गयी। बच्चे, और उनके पीछे ख़ुशी से बातचीत करते हुए वयस्क लोग भी छत के नीचे भाग गये।

"येकातेरीना अलेक्सान्द्रोव्ना कहां हैं?" लेविन ने अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना से पूछा, जो ड्योढ़ी के दरवाज़े पर दुपट्टे और कम्बल लिये हुए मिली।

"हमने तो सोचा था कि आपके साथ हैं," उसने जवाब दिया।

"और मीत्या ?"

"पासवाले जंगल में होना चाहिये और आया भी उनके साथ है।"

लेविन ने कम्बल झपट लिये और घर के पासवाले जंगल की तरफ़ भाग चला।

इसी थोड़े वक़्त में बादल के मध्य भाग ने सूरज को ऐसे ढक दिया कि सूर्यग्रहण के समय की भांति अंधेरा हो गया। हवा मानो अपनी मनमानी करती हुई बड़ी ज़िद्द से लेविन को रोक रही थी और लाइम वृक्षों से पत्तों तथा फूलों को तोड़ती और बड़े भद्दे तथा अजीब ढंग से भोज वृक्षों की सफ़ेद टहनियों को नग्न करती हुई अकासिया की झाड़ियों, फूलों, बर्डोक के कंटीले पेड़ों, घास और वृक्षों की फुनगियों, आदि, सभी को एक दिशा में झुकाती जा रही थी। बाग़ में काम करनेवाली लड़कियां चीख़ती हुई नौकरों के घर की छत के नीचे भाग गयीं। मूसलधार बारिश के सफ़ेद पर्दे ने दूर के जंगल और पास के मैदान के आधे भाग को अपनी लपेट में ले लिया था और वह तेज़ी से घर के निकट वाले छोटे जंगल की तरफ़ बढ़ रहा था। छोटी-छोटी बूंदों का रूप लेनेवाली बारिश की नमी को हवा में अनुभव किया जा सकता था।

सिर को आगे की ओर झुकाये तथा हाथों से दुपट्टे छीननेवाली हवा से मोर्चा लेता तथा दौड़ता हुआ लेविन छोटे जंगल के क़रीब पहुंच गया था और बलूत के पीछे उसे सफ़ेद-सा कुछ नज़र भी आ रहा था कि अचानक सब कुछ भड़क उठा, सारी पृथ्वी दहक उठी और मानो सिर के ऊपर आकाश की मेहराब चटक गयी। चौंधियाई हुई आंखों को खोलने पर लेविन बारिश के घने पर्दे में से, जो अब उसके और जंगल के बीच दीवार बना हुआ था, सबसे पहले तो जंगल के मध्य में परिचित बलूत की हरी फुनगी की अजीब ढंग से बदली हुई स्थिति देखकर स्तम्भित रह गया। "क्या इस पर बिजली गिर पड़ी ?" लेविन ने यह सोचा ही था कि बलूत की फुनगी अपनी गति बढ़ाती हुई दूसरे वृक्षों के पीछे ग़ायब हो गयी और उसे एक बड़े पेड़ के दूसरे पेड़ों पर गिरने की ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी।

बिजली की कौंध, बादल की गरज और उसके शरीर में सहसा फैल जानेवाली सिहरन – इन सभी चीज़ों ने मिलकर लेविन के लिये

अत्यधिक भयावह रूप धारण कर लिया।

"हे भगवान! हे मेरे भगवान, यह पेड़ उन पर न गिरा हो!" वह कह उठा।

यद्यपि उसी क्षण यह बात उसके दिमाग़ में आयी कि उसकी यह प्रार्थना कितनी अर्थहीन है कि उस बलूत से उनकी हत्या न हो जाये, जो गिर भी चुका था, फिर भी वह उसे दोहराता रहा, क्योंकि जानता था कि इस अर्थहीन प्रार्थना से बेहतर वह और कुछ नहीं कर सकता।

वह भागता हुआ वहां पहुंचा जहां बच्चे और आया के साथ कीटी अक्सर होती थी, किन्तु उन्हें वहां नहीं पाया।

वे जंगल के दूसरे सिरे पर पुराने लाइम पेड़ के नीचे थीं और उसे बुला रही थीं। काली पोशाकों में (जो पहले उजली थीं) दो आकृतियां किसी चीज़ पर झुकी खड़ी थीं। वे कीटी और आया थीं। लेविन जब भागता हुआ उनके निकट पहुंचा, तो बारिश थम चुकी थी और उजाला होने लगा था। आया की पोशाक का नीचेवाला भाग सूखा था, किन्तु कीटी की पोशाक पूरी तरह भीग गयी थी और उसके शरीर से चिपक गयी थी। बेशक बारिश थम चुकी थी, फिर भी वे दोनों उसी तरह खड़ी थीं, जैसे बारिश के ज़ोर से टूट पड़ने के समय खड़ी हो गयी थीं। दोनों हरे छाते वाली बच्चा-गाड़ी पर झुकी हुई थीं।

"ज़िन्दा हो? सही-सलामत हो? शुक्र है भगवान का!" उसने तब कहा, जब पानी से भरे गड्ढे में एक पैर के जूते के पानी से भर जाने और पांव से आधा निकल जाने के बावजूद वह दौड़ता हुआ उनके पास पहुंचा।

कीटी का लाल गालों वाला भीगा हुआ चेहरा लेविन की तरफ़ मुड़ा हुआ था और वह अपनी टोपी के नीचे से, जिसकी शक्ल बिगड़ गयी थी, सहमी-सहमी-सी मुस्करा रही थी।

"तुम्हें शर्म आनी चाहिये! मेरी समझ में नहीं आता कि कोई इतना असावधान कैसे हो सकता है!" वह बीवी पर बरस पड़ा।

"क़सम भगवान की, मेरा कोई दोष नहीं है। हम चलने को थीं कि मीत्या बेचैनी ज़ाहिर करने लगा। उसका पोतड़ा बदलना ज़रूरी था। हम अभी..." कीटी अपनी सफ़ाई देने लगी।

मीत्या ठीक-ठाक था, भीगा नहीं था और गहरी नींद सो रहा था।

"ख़ैर, शुक्र है भगवान का! मालूम नहीं, मैं क्या कहता जा रहा हूं!"

उन्होंने गीले पोतड़े समेटे, आया बच्चे को गोद में लेकर घर की ओर चल दी। लेविन अपनी पत्नी के साथ-साथ चल रहा था, गुस्से में आने के लिये अपने को अपराधी अनुभव करता हुआ वह आया से चोरी-चोरी पत्नी का हाथ दबा रहा था।

(१८)

लेविन अत्यधिक विभिन्नतापूर्ण बातचीत में मानो अपने मस्तिष्क के बाहरी पक्ष से भाग लेता रहा और उस परिवर्तन के मामले में निराशा के बावजूद, जिसकी उसने अपने भीतर होने की आशा की थी, उसे अपने हृदय की पूर्णता की सुखद चेतना बनी रही।

बारिश के बाद इतना कीचड़ था कि बाहर घूमना सम्भव नहीं था और इसके अलावा जल भरे मेघ क्षितिज पर अभी तक बने हुए थे तथा आकाश के छोरों पर जहां-तहां घने हो उठते थे, गरजने लगते थे। इसलिये सभी लोगों ने दिन का शेष भाग घर पर ही बिताया।

फिर से कोई बहस नहीं छिड़ी, इसके विपरीत दोपहर के भोजन के बाद सभी बड़े अच्छे मूड में थे।

कातावासोव ने शुरू में महिलाओं को अपने मौलिक मज़ाक़ों से ख़ूब हंसाया, जो पहले परिचय के बाद हमेशा ही बहुत पसन्द आते थे। इसके बाद कोज़्निशेव की प्रेरणा पर उसने अपने निरीक्षणों के आधार पर घरेलू नर तथा मादा मक्खियों के बारे में, उनके विभिन्न लक्षणों और चेहरों-मोहरों की भी बहुत दिलचस्प चर्चा की। कोज़्निशेव भी रंग में था और चाय के समय उसने लेविन के आग्रह पर पूर्वी प्रश्न के बारे में अपना दृष्टिकोण इतने सीधे-सादे और अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया कि सभी ने बड़े ध्यान से उसे सुना।

केवल कीटी ही अन्त तक उसकी बात नहीं सुन सकी – उसे मीत्या को नहलाने के लिये बुला लिया गया।

कीटी के जाने के कुछ देर बाद लेविन से भी बच्चे के कमरे में जाने को कहा गया।

अपनी चाय बीच में ही छोड़ने, दिलचस्प बातचीत के अधूरी

रह जाने का अफ़सोस अनुभव करते और साथ ही इसलिये चिन्तित होते हुए कि उसे किसलिये बुलाया गया है, क्योंकि ऐसा तो महत्त्वपूर्ण अवसरों पर ही होता था, वह बच्चे के कमरे की ओर चल दिया।

बेशक यह सही है कि मुक्त होनेवाले चार करोड़ स्लावों के रूस के साथ मिलकर इतिहास में एक नया युग आरम्भ करने के बारे में कोज़्निशेव की योजना एक सर्वथा नयी चीज़ के रूप में उसे बहुत दिलचस्प लगी थी और वह उसे अन्त तक सुन नहीं पाया था, बेशक उसे इस बात की जिज्ञासा और चिन्ता भी थी कि उसे बच्चे के कमरे में क्यों बुलाया गया है, फिर भी वह जैसे ही मेहमानखाने से बाहर निकला और अकेला रह गया, वैसे ही सुबह के विचार उसे पुनः याद हो आये। और उसकी आत्मा में हो रही उथल-पुथल की तुलना में विश्व-इतिहास में स्लाव तत्त्व के महत्त्व के बारे में सभी विचार उसे इतने तुच्छ लगे कि वह आन की आन में यह सभी कुछ भूल गया और फिर से उसका वैसा ही मूड हो गया, जैसा आज सुबह था।

पहले की तरह उसने अपने सभी विचारों को अब फिर से नहीं दोहराया (उसे इसकी ज़रूरत नहीं थी)। वह फ़ौरन उसी भावना की स्थिति में पहुंच गया, जो उसका संचालन कर रही थी, जो इन विचारों के साथ सम्बन्धित थी और उसने इस भावना को अपनी आत्मा में पहले से कहीं अधिक स्पष्ट और सशक्त पाया। अब उसके साथ वैसा नहीं हुआ, जैसा कि मन का चैन लौटाने के लिये उसे पहले करना पड़ता था, जब भावना को पाने के लिये उसे अपनी पूरी विचार-शृंखला को दोहराना होता था। अब, इसके विपरीत, ख़ुशी और चैन की भावना पहले से अधिक सजीव थी और विचार भावना का साथ नहीं दे पा रहा था।

वह छज्जे को लांघ रहा था और अंधेरे से घिर चुके आकाश में जगमगा उठे दो सितारों को देखते हुए उसे सहसा याद हो आया – "हां, आकाश को देखते हुए मेरे दिमाग़ में यह ख़्याल आया था कि मैं जो मेहराब देख रहा हूं, वह धोखा नहीं है और ऐसा करते समय मैंने किसी बात पर पूरी तरह विचार नहीं किया था, अपने से कुछ छिपाया था," उसने सोचा। "किन्तु वह कुछ भी क्यों न हो, उसके विरुद्ध कोई आपत्ति नहीं हो सकती। मेरे सोचते ही सब कुछ स्पष्ट हो जायेगा!"

बच्चे के कमरे में प्रवेश करते हुए उसे यह याद आ गया था कि उसने अपने से जो कुछ छिपाया था, वह क्या था। वह यह था कि भगवान के अस्तित्व का सबसे बड़ा प्रमाण उसका भलाई-सम्बन्धी रहस्योद्घाटन है, तो यह केवल ईसाई धर्म तक ही क्यों सीमित है? इस रहस्योद्घाटन का बुद्ध धर्म और इसलाम से क्या सम्बन्ध है, जो ईसाई धर्म की तरह ही भलाई करते हैं, उसका उपदेश देते हैं?

उसे लगा कि उसके पास इस प्रश्न का उत्तर है, किन्तु अपने को जवाब बताने के पहले ही वह बच्चे के कमरे में दाखिल हो गया।

कीटी आस्तीनें ऊपर चढ़ाये हुए नहाने के टब के पास खड़ी थी, जिसमें बच्चा पानी से खिलवाड़ कर रहा था। पति के पैरों की आहट सुनकर वह उसकी ओर मुड़ी और मुस्कान से उसे अपनी तरफ़ बुलाया। एक हाथ से वह गुदगुदे और टांगें चलाते हुए मीत्या का सिर थामे थी, जो पानी पर तैर रहा था, और दूसरे हाथ की पेशियों पर एक नियमित लय से ज़ोर डालते हुए उस पर स्पंज से पानी डाल रही थी।

"ज़रा देखो, देखो तो!" उसने पति के निकट आने पर उससे कहा। "अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना की बात ठीक है। पहचानता है।"

बात यह थी कि आज के दिन से मीत्या निश्चय ही अपने लोगों को पहचानने लगा था।

लेविन के नहाने के टब के निकट आते ही उसे यह तजरबा करके दिखाया गया और वह कामयाब रहा। इस तजरबे के लिये बुलायी गयी बावर्चिन उसकी तरफ़ झुकी कि वह उसे पहचान ले। बच्चे ने नाक-भौंह सिकोड़ी और इन्कार करते हुए सिर हिला दिया। इसके बाद कीटी उसकी ओर झुकी, मीत्या खिल उठा, उसने स्पंज को अपने हाथों से पकड़ लिया और होंठों से ऐसी अजीब और हर्षपूर्ण आवाज़ निकाली कि कीटी और आया ही नहीं, बल्कि लेविन भी आनन्द-विभोर हो उठा।

बच्चे को एक हाथ पर टब से बाहर निकाला गया, उस पर ताज़ा पानी डाला गया, चादर में लपेटकर पोंछा गया और उसकी ज़ोरदार किलकारी के बाद उसे मां को सौंप दिया गया।

"मुझे ख़ुशी है कि तुम इसे प्यार करने लगे हो," बच्चे को स्तन-पान करवाने के लिये उसे गोद में लेकर अपनी अभ्यस्त जगह

पर बैठने के बाद कीटी ने कहा। "मैं बहुत ख़ुश हूं। नहीं तो मुझे इस कारण बहुत चिन्ता होने लगी थी। तुम्हारा कहना था कि तुम उसके प्रति कुछ भी महसूस नहीं करते।"

"नहीं तो क्या मैंने ऐसा कहा था कि मैं कुछ भी महसूस नहीं करता? मैंने सिर्फ़ यही कहा था कि मुझे निराशा हुई है।"

"क्या मतलब, इससे निराशा हुई है?"

"इससे नहीं, अपनी भावना के मामले में निराशा हुई है – मैं कुछ अधिक की आशा कर रहा था। मुझे उम्मीद थी कि मानो एक अचम्भे की तरह मेरे भीतर एक नयी, मधुर भावना पलक खोल देगी। किन्तु सहसा इसकी जगह पर घिन और दया की अनुभूति हुई..."

कीटी बच्चे को स्तन-पान कराते और अपनी पतली उंगलियों में अंगूठियां पहनते हुए, जो उसने मीत्या को नहलाते समय उतार दी थीं, बहुत ध्यान से लेविन की बात सुन रही थी।

"और सबसे बड़ी बात तो यह है कि ख़ुशी के बजाय भय और दया की कहीं अधिक अनुभूति हुई। आज आंधी-पानी के समय अनुभव हुए भय के बाद मैं समझ गया कि उसे कितना अधिक प्यार करता हूं।"

कीटी के चेहरे पर मुस्कान खिल उठी।

"तुम बहुत डर गये थे क्या?" कीटी ने पूछा। "मैं भी, मगर अब, जब यह बीत चुका है, मुझे कहीं अधिक डर महसूस हो रहा है। मैं बलूत को देखने जाऊंगी। कातावासोव कितना प्यारा आदमी है! वैसे तो पूरा दिन ही बहुत अच्छा रहा। सेर्गेई इवानोविच के साथ तुम भी इतने अच्छे ढंग से पेश आते हो, जब तुम चाहते हो... तो तुम उनके पास जाओ। स्नान के बाद यहां हमेशा गर्मी और भाप होती है..."

(१६)

बच्चे के कमरे से बाहर निकलने और अकेला रह जाने पर लेविन को फ़ौरन फिर से वही विचार याद हो आया, जो उसके लिये कुछ स्पष्ट नहीं हुआ था।

मेहमानख़ाने में जाने के बजाय, जहां से आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, वह छज्जे पर ही रुक गया और रेलिंग पर कोहनियां टिकाकर आकाश को ताकने लगा।

बिल्कुल अंधेरा हो चुका था और दक्षिण में, जिधर वह देख रहा था, बादल नहीं थे। बादल दूसरी दिशा में थे। वहां से बिजली कौंधती थी और दूर से बादल की गरज सुनाई पड़ती थी। लेविन लाइम पेड़ों से लगातार गिर रही बूंदों की आवाज़ को सुन रहा था और सितारों के अपने परिचित तिकोण तथा उसके बीच से गुज़रनेवाली आकाशगंगा तथा उसकी शाखाओं को देख रहा था। बिजली की हर कौंध पर आकाशगंगा ही नहीं, बल्कि चमकीले सितारे भी ओझल हो जाते थे। किन्तु जैसे ही बिजली की कौंध ग़ायब होती, वैसे ही वे फिर उसी जगह पर ऐसे प्रकट हो जाते मानो किसी सधे हुए हाथ ने उन्हें फिर से वहां फेंक दिया हो।

"मुझे क्या चीज़ परेशान कर रही है?" लेविन ने पहले से ही यह अनुभव करते हुए अपने आपसे पूछा कि उसके सन्देह का समाधान उसकी आत्मा में तैयार है, यद्यपि वह उसे जानता नहीं है।

"हां, भगवान के अस्तित्व का एक स्पष्ट और निर्विवाद प्रमाण भलाई के नियम है, जो संसार के लिये एक रहस्योद्‌घाटन के रूप में प्रकट हुए हैं, जिन्हें मैं अपने भीतर अनुभव करता हूं और जिन्हें मान्यता देते हुए मैं धार्मिक आस्था रखनेवाले दूसरे लोगों के संगठन से, जिसे चर्च कहते हैं, सूत्रबद्ध तो नहीं, किन्तु चाहे-अनचाहे जुड़ा हुआ हूं। किन्तु यहूदी, मुसलमान, कनफ़्यूशस के अनुयायी, बुद्ध धर्म के मानने-वाले – ये क्या हैं?" उसने अपने आपसे वह प्रश्न पूछा, जो उसे ख़तरनाक लगता था। क्या ये करोड़ों लोग उस उच्चतम वरदान से वंचित हैं, जिसके बिना जीवन का कोई अर्थ नहीं?" वह सोच में पड़ गया, किन्तु उसी क्षण उसने अपने को सही किया। "मैं यह क्या पूछ रहा हूं?" उसने अपने आपसे कहा। "मैं भगवान के प्रति सारी मानवजाति के विभिन्न धर्मों के रवैये के बारे में पूछ रहा हूं। मैं इन सभी अस्पष्ट बातों के साथ सारी दुनिया के लिये भगवान के सामान्य प्रकटीकरण के बारे में प्रश्न कर रहा हूं। यह मैं क्या कर रहा हूं? व्यक्तिगत रूप से मुझे, मेरे हृदय के लिये निश्चय ही उस ज्ञान का उद्‌घाटन हो गया है, जिसे बुद्धि से प्राप्त नहीं किया जा सकता और मैं हठपूर्वक इस ज्ञान को बुद्धि द्वारा तथा शब्दों में व्यक्त करना चाहता हूं।

"क्या मैं यह नहीं जानता हूं कि सितारे गतिमान नहीं हैं?"

उसने उस चमकीले ग्रह की ओर देखते हुए अपने आपसे प्रश्न किया, जिसने भोज वृक्ष की फुनगी की दृष्टि से अपनी स्थिति बदल ली थी। किन्तु सितारों को गतिमान देखते हुए मैं पृथ्वी के गतिमान होने की कल्पना नहीं कर सकता और जब मैं यह कहता हूं कि सितारे चलते हैं, तो ठीक ही कहता हूं।

"और अगर खगोलशास्त्री पृथ्वी की सारी विभिन्न गतियों को ध्यान में रखते, तो क्या कभी कुछ समझ पाते और हिसाब-किताब जोड़ने में सफलता प्राप्त कर सकते? आकाश-पिंडों के फ़ासलों, वज़न, गतियों और व्यतिक्रमों के बारे में उनके सभी अद्भुत निष्कर्ष गतिहीन पृथ्वी के गिर्द तारकों की दृश्यमान गतिशीलता पर आधारित हैं, उसी गतिशीलता पर, जो इस समय मेरे सामने है, जो शताब्दियों के दौरान करोड़ों लोगों के लिये ऐसी ही थी, ऐसी ही थी और हमेशा ऐसी ही रहेगी तथा हमेशा जिसको जांचा जा सकता है। एक मध्यरेखा और एक क्षितिज के बनिस्बत दृश्यमान आकाश के निरीक्षण पर न आधारित होनेवाले खगोलशास्त्रियों के निष्कर्ष जैसे ढीले-ढाले और ढुलमुल होते, ठीक उसी तरह भलाई की उस धारणा को आधार न बनानेवाले मेरे निष्कर्ष भी ढीले-ढाले और ढुलमुल होते, जो सभी के लिये हमेशा समान थी और होगी तथा जिसका ईसाई धर्म ने मेरे लिये उद्घाटन किया और जिसे हमेशा मेरी आत्मा में जांचा-परखा जा सकता है। दूसरे धर्मों और भगवान के प्रति उनके रवैये के प्रश्न का समाधान ढूंढ़ने का मुझे न तो अधिकार है और न सम्भावना ही प्राप्त है।"

"अरे, तुम अभी तक यहां हो?" इसी रास्ते से मेहमानख़ाने की ओर जाती हुई कीटी की अचानक आवाज़ सुनाई दी। "तुम किसी कारण परेशान तो नहीं हो?" सितारों के प्रकाश में बहुत ध्यान से पति के चेहरे को देखते हुए उसने पूछा।

किन्तु यदि सितारों को फिर से लुप्त कर देनेवाली बिजली की कौंध ने उसके चेहरे को रोशन न कर दिया होता, तो वह उसे देख न पाती। बिजली की कौंध की रोशनी में उसे पति का पूरा चेहरा दिखाई दे गया और उसे शान्त तथा प्रसन्न पाकर वह उसकी ओर मुस्करा दी।

"वह मुझे समझती है," लेविन ने सोचा, "वह जानती है कि मैं किस बारे में सोच रहा हूं। इसे बताऊं या नहीं? हां, मैं इसे बता दूंगा।" किन्तु जिस क्षण उसने बात शुरू करनी चाही, कीटी भी उसी समय बोल पड़ी।

"सुनो, कोस्त्या! मेरे लिये इतना काम करो," वह बोली, "कोनेवाले कमरे में जाकर यह देख लो कि सेर्गेई इवानोविच के लिये कैसे सारी व्यवस्था की गयी है। मुझे अटपटा लग रहा है। हाथ-मुंह धोने की नयी चिलमची वहां लगा दी गयी है या नहीं?"

"अच्छी बात है, मैं अभी जाता हूं," लेविन ने उठते और उसे चूमते हुए कहा।

"नहीं, मुझे नहीं कहना चाहिये," कीटी जब उसके आगे-आगे चल दी, तो उसने सोचा। "यह एक रहस्य है, जिसकी केवल मुझे आवश्यकता है, जो महत्त्वपूर्ण है और जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

"इस नयी भावना से मुझमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ, इसने मुझे सुखी नहीं बनाया, मुझे सहसा कोई प्रकाश नहीं दिया, जैसी कि मैंने आशा की थी, ठीक वैसे ही जैसे बेटे के प्रति मेरी भावना के मामले में हुआ था। आश्चर्य की भी कोई बात नहीं हुई। यह मेरी आस्था है या कुछ और—यह क्या है मुझे मालूम नहीं, किन्तु यह भावना भी व्यथाओं-पीड़ाओं के साथ अनजाने ही मेरी आत्मा में प्रवेश कर गयी है और जमकर बैठ गयी है।

"पहले की भांति कोचवान इवान पर बिगड़ूंगा, उसी तरह से वाद-विवाद करूंगा, किसी प्रसंग के बिना अपने विचार प्रकट करूंगा, मेरी आत्मा की गहराई और दूसरों के बीच, यहां तक कि मेरे और मेरी पत्नी के बीच दीवार बनी रहेगी, उसी तरह अपने भय के लिये उसे दोषी ठहराऊंगा और इसके बारे में पछताऊंगा, उसी भांति बुद्धि से यह नहीं समझ पाऊंगा कि मैं किसलिये प्रार्थना करता हूं, मगर फिर भी प्रार्थना करूंगा। किन्तु अब मेरा जीवन, मेरे साथ कुछ भी क्यों न हो, मेरा सारा जीवन, उसका हर क्षण पहले की भांति न केवल अर्थहीन नहीं रहा, बल्कि भलाई के रूप में उसे एक अर्थ प्राप्त हो गया है, जो मैं उसे प्रदान करने में समर्थ हूं!"

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन
इस पुस्तक की विषयवस्तु,
अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में
आपके विचार जानकर
आपका अनुगृहीत होगा।
आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी
हमें बड़ी प्रसन्नता होगी।
कृपया हमें इस पते पर लिखिये:

प्रगति प्रकाशन,

जूबोव्स्की बुलवार, १७, मास्को, सोवियत संघ।